

शिक्षा विभाग, राजस्थान बीकानेर
के लिए



कृष्ण जनसेवी एण्ड को, बीकानेर ।

निर्निमेष



सं. मेघराज मुकुल

शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर

शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर के लिए

प्रकाशक कृष्ण जनय्यवी एण्ड का
दाऊजी मंदिर भवन बीकानेर

सम्पादक मेघराज मुकुल

मूल्य पन्द्रह रुपये तब्ब पस मान

आवरण हार्डिकाश त्यागी

संस्करण प्रथम, 1987

मुद्रक एस० एन० प्रिंटर्स

नवीन शाहदरा दिल्ली 110032

NIRNIMESH Edited by Meghraj Mukul Price Rs 15 90

आमुख

शिक्षक—सम्मान—समाराह के अवसर पर
शिक्षा विभाग के लेखक, कवि अध्यापक की
कृतियाँ हिंदी ससार का सादर प्रस्तुत हैं।

नारायण जोशी

(नारायण प्रकाश जोशी)
निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

शिक्षक दिवस प्रकाशन : परिचय

शिक्षक शिक्षण काय व लिए नो प्रनिवद्ध हैं ही, पर उनके व्यवित्व और वृत्तित्व के अनेक आयाम और भी हैं। इसी का मद्देनजर रख कर राजस्थान के शिक्षा विभाग ने राजस्थान के सजनशील शिक्षक नयका की साहित्यिक प्रतिभा का प्रात्साहन दन और उजागर करन हेतु सप 1967 म एव योजना तयार की। योजना के तहन शिक्षक दिवस (5 नितम्बर) के अवसर पर सजनशील शिक्षक लेखका की रचनाआ व सकलन प्रवाशित करन का काय हाप म लिया गया। 1973 तक इस योजना के अतगत विविध विधाआ के 31 सकलन प्रकाशित किए गये। रचनाआ के चयन सपादन का काय निदेशालय का प्रकाशन अनुभाग करता था। चहुओर से योजना का प्रात्साहन मिनने पर चयन सपादन का काय भारतीय ध्याति के विधा व सभज्ञ नयका से करवाकर योजना का एव नया रूप दिया गया। 1974 स अब तक 70 विविध विधाआ के सकलन प्रकाशित हा चुके हैं। इस तरह प्रकाशित सकलन की कुल सख्या 101 हा गई है।

इस योजना द्वारा प्रात्साहन पाकर राजस्थान के कई सजनशील शिक्षक लेखका व आज भारतीय स्तर पर प्रकाशन स्थान प्राप्त हो रहा है। अब राज्या के शिक्षा विभाग व भारतीय ध्याति की पत्रिकाओ ने योजना के अतगत प्रकाशित सकलन का सराहना की है।

सप 1987 र सकलन और सम्पादक निम्नलिखित हैं—

- (1) बीच का आदमी तथा अन्य कहानिया (कहानी सक्लन) स० शानी ।
- (2) मातिया का धाल (वाल साहित्य) स० मनोहर वमा (3) मिरक्षण री मीरम (राजस्थानी विविधा) स० नंद भारद्वाज (4) माटी की सुवास (हिंदी विविधा) स० सावित्री डागा (5) निर्निमेष (कविता सक्लन) स० मधराज प्रकुस ।

अध्यापक और कविता

शिक्षक दिवस का हरवष आना, नश म एक जीते जागते सांस्कृतिक आंदोलन का बार-बार स्मरण है। वह राजनीति के पचड़े से बहुत दूर होत हुए भी अब दयनीय बनता जा रहा है। आज भी शिक्षक यही सोचता है कि वह मुक्त नहीं है। उसे मस्तिष्क की स्वाधीनता प्राप्त नहीं है। रोम्या रोला ने टीक ही कहा है —

"जा काइ मानव समाज के भविष्य के लिए युद्ध करना चाहता है, उस राजनैतिक क्षेत्र में युद्ध करना चाहिए, पर अपन मस्तिष्क की स्वाधीनता का किसी भी हालत में नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि मानसिक स्वाधीनता ही उसे युद्ध क्षेत्र में हावी बनाए रखेगी।"

आज के युग में शिक्षक दयनीय और तिरस्कृत न हो। उसे भर पट रोटी मिले। वह मानसिक दासता का शिकार न हो। इसीलिए शायद उस कविता लिखने के रूप में कुछ मानसिक स्वाधीनता दी जाती है। इसका प्रमाण यह काव्य सङ्ग्रह है। दबी जवान में ही सही वह अपनी मानसिक पीड़ाओं को अनेक प्रकार से आवरण में तपेट कर भी, शालीनता और सलीके से अदम्य अनुभूतियों को व्यक्त कर गया है।

कविराज विश्वनाथ ने रस शास्त्र में वर्णित काव्य रस के स्वरूप का सार इस प्रकार अंकित किया है —

सत्त्वोद्वेगादखण्ड स्वप्रकाशानन्द चिन्मय ।
वेदांतर स्पष्ट शायो ब्रह्मास्वाद सहोदर ॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राणा कौञ्चितप्रमातभि ।
स्वाकारवदभि नृत्त्व नायमास्वाद्यत रस ॥

(साहित्य दपण, तृतीय परिच्छेद)

रसमयत इति रस । जिनका आम्बादन हा यह रस है । इस सफलन म अधि मास कविताआ म मत्व का उद्देश है । उनका आस्वाद अनिवाधन आनन्दमय है । विशेष बात कविताआ म अथवा अष्टष्ट पाना है । इसम अनुभव की पाठा है, प्रति पवदन ह और एगी दग्ध-उत्पीडा की व्यापा है, जा साधारणन गुन आम शिष्य द्वारा नहीं कही जानी । व पराग म्प स यही प्रथम बरत है कि सम्मान की भाषा म उनके वचन का स्वीकारा हो कर गया ?

फिर भी उनकी कविताआ का नकारना ता अतृप्तता हागी । उनकी काव्या नुभूतिया का आनन्द प्रत्यक्षत एव द्रव्य आनन्द नहीं है । तबिन व आत्मनिषेध की परिचायक भी नहीं हैं । कही कही अस्पष्ट असंगतिया और भ्रांतिया भी हैं जा उनकी प्रौढ विचारधारा व प्रवाह का रोवती है ।

समय और परिवेश म प्रभावित आज की कविता का नवीनता की धारणी म दुबाकर उसकी विषयवस्तु और शिल्प दोनों को गितात विलग बतात हुए, यह कहा जाता है कि युगवाध सोदययोध अस्तित्ववाध और रपायवाध का स्पश उसन ही सर्वाधिक सुपर है, और केवल एगी ही कविता मानवीय मूल्या का गुणिन सदभों स जोड़ पाई है । शिल्पिक दृष्टि से भी केवल अथल्य के प्रतिमाना की मवाहय यही कविता है । इसकी अववत्तापूण भाषा का भी शिक्र होना है । बिम्बा का प्राच्य भी इसम अधिक उजागर हुआ है । नवीनतम प्रतीका की भरमार स, इसके द्वारा जीवन दष्टि को अधिक परिष्कृत किया जा सवा है । वस्तुतः य प्रति-बद्धताए काव्य क्षत्र म दिशामयी कब नहीं रही है ? जब कविता का अन्यथावादी बना दिया गया, तभी स वह निर्दिशामयी हाकर एक गूट विशेष की हा गई । सत्य यही है कि कविता आज भी कविता ही है । चाहे व छदबद्ध हा, चाहे मुक्तछद, हो, उसकी सवेदनशीलता शिल्पिक प्रतिमाना की दास नहीं है, और न ही उसे चमत्कारपूण अभिदान दकर, मूल स्वरूप स बदला जा सवता है ।

प्रस्तुत काव्य सफलन कविता विषमक नई भ्रान्तियों का करारा उत्तर है । अध्यापक जसी साधारण किन्तु विराट शक्ति न, यह चुनौती दी है कि काई उसे यह कहकर तो दखे कि उस कविता लिपने की समझ नहीं है । साधना और अटूट अनवरतता व अभाव म कहा कही छदभग है और कही कही अथल्य की सघात भरी नुटि भी किन्तु शिल्पगत एसा दोष ता सयत्र है । मुक्तछद म लिखी हुई कविताआ म ऐस याथात अधिक ह । जिन अध्यापका का छद का पान है उनका मुक्तछद भी सहज और सौम्य है । जिहें पिंगल का प्रारम्भिक ज्ञान भी नहीं है उन्होंने मुक्तछद म निधी कविता की अधूरी समझ स उसकी आत्मा के साथ दुष्कम किया है । सौभाग्य स एस उदाहरण बहुत कम हैं ।

पिछले चार दशक मे मन अपनी काव्य यात्राया म यही पाया है कि कविता का हास नहीं हुआ ह । वह आज भी सशक्त अभिव्यक्ति है । कभी कभी जन संपक से हटकर वह वादिक विलास का साधन भी बनी है, किंतु ऐसे आयाम बहुत थोड़े जाए है । अतः कविता का भविष्य और भी उज्ज्वल है । अध्यापक बंधुओं को चाहिए कि वे कविता को राह चलती तुकबंदी का साधन न बनाए और न मुक्तछंद के नाम पर या नई अभिव्यक्ति के नाम पर, उसके शाश्वत अंग को पोलियोग्रस्त बनाए । केवल टढ़ी मढ़ी पवित्रता लिखना ही नई अभिव्यक्ति नहीं है । कविता जीवन का सार ह, कविता आत्मा का रस ह, अतः उस नाम कुछ भी दें, शिल्प काई भी प्रदान करें उसके स्वरूप की स्वाभाविकताओं को न बदलें । उसे विचार वीथियों की यात्रा करने दें, किंतु उसे पथघ्रष्ट होने से बचाए ।

सुंदर और प्राण शक्ति म भरी कविता सुसंस्कृत अध्यापकीय जीवन का ऊर्जा देती ह । यदि वह स्वयं ऐसी कविता का निर्माण करता है तो वह निश्चय ही अध्यापकीय सुसंस्कारों से सम्पन्न ह । मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि मेरे भीतर सन् 1944 मे जब एक छोटा सा अध्यापक था तब मैंने अपन सुसंस्कारों के बल पर ही "सैनाणी" जसी रचना का रसानुभूति और सौ दयानुभूति से सम्पन्न कर उसका विराट जन शक्ति के साथ तादात्म्य स्थापित करवा दिया था । इसका श्रम मेरे व्यक्ति को नहीं, मेरे भीतर अवस्थित अध्यापक के व्यक्तित्व का था । उस युग म यदि मैं "सैनाणी" लिख सकता था तो आज के युग म अध्यापक उस रचना मे अधिक सशक्त कविता लिख सकता ह । इसका प्रमाण प्रस्तुत काव्य सङ्कलन मे सङ्गृहीत कुछ रचनाएँ हैं जो परिवर्तित युग का घोष करती हुई, नये नये काय आयामों को स्थापित करने मे सफल ह ।

"सैनाणी" से भिन्न इस काव्य-सङ्कलन म प्रस्तुत निम्नलिखित कविता को पढ़िये । मन हुआ व दावन' शीपक से लिखी इस कविता मे श्रीमती सावित्री परमार न, अपने अध्यापकीय संस्कारों म पिरोकर जो भावनाएँ व्यक्त की हैं और जैसे मनभावन शिल्प से उस सजाया है, वह केवल प्रशंसात्मक शब्दों म नहीं बंध पा रहा । उनके श्रवण और नयन से प्रवेश पाकर एक वशी की धुन मन म उतर आइ है, और फिर सम्पूर्ण मन ही व-दावनमय हो गया है —

दूर वशी बज उठी

मन हुआ व-दावन

लल छोड़ी मी भोर सदली

उलट गइ अधिमारी पतें

साप चपई

सूरज किरणें

बाध गया दिनकर की शतें

पाती गी खुल गई

धूप का छूवर चदन

खेता खलिहानों में छलका

मौसम का वाससी झरना

मधुमानी बाहों में महका

सरसा का शृंगारित सपना

सूरजमुखी क्षणों को यादें,

रना गई दरपन !

अब आप ही बताइए हैं कोई जवाब इन अछूती अनुभूतियाँ का ? इसी प्रकार की कितनी ही रचनाएँ श्रीमती सावित्री परमार की तरह अथ अध्यापक-अध्यापि काओं ने लिखी होगी । इनमें से श्री भगवतीलाल व्यास भी एक अनूठे कवि के रूप में इस प्रकार हम झकझोरते हैं—

‘मा जी जब आप अनपढ़ हैं

हिस्साब किताब नहीं जानती

तब लेनदेन हम क्या नहीं सौंप देती ?’

मा की छाटी छाटी

गड़ढो में घसी आखा में

न शिकायत कौंधती है

न कोई उत्तर मंचलता है ।

अस, मा की आँखें

निर्विकार हो रहती हैं

सून आकाश की तरह !

मा की आँखें, जिन्होंने ऐसी कठुणा भागी और विवशता में बगी दखी हैं, और जिन्होंने आधुनिक बहुआ के तेवर पहचाने हैं, वे जानत हैं कि बूढ़ी दह में और विशेषकर गड़ढो में घसी आखों में शिकायत क्या नहीं कौंधती और कोई उत्तर क्यों नहीं मंचलता । श्री भगवतीलाल व्यास ने केवल दो पक्तियों में, पीढ़ियों के बीच में पड़ी दरार को, गहरी सवदात्मक अनुभूति द्वारा सशक्त अभिव्यजना प्रदान का है ।

ऐसी कविताएँ अनक हैं। उनमें से कोई-कोई अधिक कौंध जाती है। श्री चन्द्र मोहन हाडा 'हिम्कर' की निम्नलिखित पंक्तियाँ नितास्त भिन्न प्रकार से व्यक्त हुई हैं—

नयजीवन म तूफान तिमिर,
मन विकल विवम्पित रहता है।
जब मानवता पर सबट हो,
कवि राकर जग का कहता है—
'नफरत की सेती बंद करा,
फिर प्यारसे प्यार उमड़ता है।
जा जलता है वह गिरता है।
जा हसता है वह चडता है।'

प्रश्न उठता है कि ऐसी सीधी-सादी किन्तु ओजपूर्ण अभिव्यक्ति को आप किस श्रेणी में रखेंगे? इसमें भाषा मुहावरे का नया दम्भ नहीं है। न बिम्बविधान है, न प्रतीक रेखाएँ। फिर भी सम्पूर्ण कविता का पठकर, मन का स्पष्ट बोलने लगता है।

अवसाद के विस्तार में, 'यम्य' का तीखापन आए बिना नहीं रहता। नयी कविता कही जान वाली रचनाओं में कभी-कभी असंतोष और अम्बीकृति का स्वर विद्यमान रहता है। टूटन की तरफ़ी सक्रांतिजय सन्नास, विसर्गतिथ्या, मूल्य-हीनता आदि ऐसी भावनाएँ हैं, जो भोग हुए क्षणा से असंपक्व होकर भी, अपने का दैनिक जीवन की जुगुप्साओं से जोड़ती चली जाती है। लेकिन ऐसी यातनाएँ, अध्यापक से बनकर कौन पा रहा होगा? वह तबादलो से भयभीत और व्रस्त रहता है, क्योंकि उसकी आर्थिक दुदशा उसे इज्जत-आवरु से जीन नहीं देती। वह हडताल और अनशन का सहारा नेता है क्योंकि उसके पास और कोई सहारा नहीं है। वह ईमानदारी से विद्यार्थियों को पढ़ाता भी नहीं है, क्योंकि सामाजिक कूटाभा ने उसे पग-पग पर रौंद रखा है। उसका शिक्षण स्तर गिरता जा रहा है, क्योंकि किताबा में लिखा हुआ अधिवाश भाग थाये उपदेशों से वाञ्छित है। उसके छात्र निकम्मे, नशवाज, अनुशासनहीन और आधातनकारी हैं क्योंकि वह अध्यापक और शासन तन्त्र से कुछ भी नहीं पाता। नई-नई योजनाएँ बरसो से बन रही हैं कि तु वे वर्तमान आवश्यकताओं की धमनियों में जहर अधिक भरती हैं। लेकिन जहाँ अच्छे स्वतः हैं अच्छे अध्यापक हैं अच्छे छात्र हैं, वहाँ कविता नहीं फूटती। कविता फूटती है बेदना के मुहाने पर। इस सबलन में सप्तहीत कवि-

। आ के पीछे वेदना की सही अभिव्यक्ति है। ऐसा लगता है, जैसे प्रत्येक कवि के हृदय से लावा फूट रहा है। वह बिन्ही अदृश्य जजोरा को ताड़ने के लिए कसमसाता हुआ भा दियाई देता है। उसकी छटपटाहट असली है। इसीलिए वह मर से कुछ न बालकर कविता में प्रस्फुटित होता हुआ, नदी नाले और पहाड़ों का साधता हुआ चला जाता है।

मुझे इन नये गोजवान कवियों से मिलकर आंतरिक प्रसन्नता मिली है। इनमें अदम्य उत्साह है। मर युग की लेखनी का इन्होंने दखा-परखा है और उससे अधिक शक्तिशाली लेखनी लेकर कविता का नही पथ पर आगे बढ़ाया है। आज से कुछ वर्ष पूर्व मुक्तिजोध ने लिखा था—

जीवन घमा अध्यापक कवि जितना टूटा है उतना जुड़ा नहीं है। बाहर और भीतर की टूटन उसे न शिक्षक बनकर रहने देती है, न कवि बनकर। आखिर कौन हैं वे उत्तरदायित्वहीन तत्व जो उम सजबाग दियाकर भी जीन नहीं देते? कविता तो उसे इसलिए जीवित रखती है कि वह आखिरी दम तक लड़े, मुद्ध बरे। अध्यापक कवि आज भी ठीक चुनाव नहीं कर पा रहा कि वह क्या कर क्या न कर। इस सकलन में भी ऐसी विवशताएं दिखाई देती हैं।

आज शिक्षक शिक्षक तो है लेकिन गुरु नहीं है। वह बसवता चाहता है रूप और यौवन के साथ साथ यश कीर्ति भी चाहता है, पर कविता लिखकर भी वह गुरु के कमलवत चरण नहीं छूना जिनकी वेदना की जा सके। शंकराचार्य ने कहा है—

शरीरं सुरूपं तथा कलत्रं यश चारविन्दं धनमस्तुत्यम् ।

मनश्चेन्नलम्नं गुरोरधिपद्ये तत किं, तत किं त किम् ॥

अतः शिक्षक की वकालत करते हुए भी उसकी कविता का प्रशंसा करते हुए भी उसमें गुरु होने के अभाव की शिकायत तो रहेगी ही। लेकिन यह दाप नहीं, 'अभाव' ही है जिसे पूरा करना भी अनिवार्य है।

बी 14 विवेकानन्द मार्ग,
सी स्कीम
जयपुर 302004



(मेहराज मुकुल)

अनुक्रम

मादित्री परमार	मन हुआ वृंदावन/बान बस्तूरी	17
भगवती लाल व्यास	मा की आँखें/	19
चंद्र मोहन "हाडा हिमकर"	घरती राजस्थान की/नफरत की	21
रामस्वरूप परेश	भौसम ने	23
त्रिलोक गोयल	कुल लोग	24
गोपाल प्रसाद भुदगल	टूटन	26
पुष्पलता कश्यप	शिकायत नामा	28
नवनीत कुमार व्यास	कुछ तासा इतनाम हा	29
सगीर शाय'	गजल	29
कैलाश चंद्र शर्मा	भारत दश हमारा	30
विष्णु लाल जोशी	जकाल की छाया	31
ज्ञान प्रकाश पीयूष	मेरी ज़िंदगी	32
कमर मवाड़ी	तुम्हारी याद में	33
राम गोपाल राही	ध्या फला की	34
वासुदेव चतुर्वेदी	गीत नए भोर के	35
अरविंद खुरवी	बैचारा जगल	37
ओम पुरोहित 'कागद'	स्वाद बतायगी कविता	37
ब्रजभूषण भट्ट	तक्षक नाग परीक्षित	38
नंद किशोर चतुर्वेदी	आजो बीत अधियारा	39
शिव मडुल	बीमार जलवायु	41
सीमा पवार	सूरज सी ज़िंदगी	42
अरविंद तिवारी	गीत	43
गीतम सिंह परमार	मजिल	44
चमेली मिश्र	शहर	46
रामनिवास नुवोडिया	अभिप्रेत/बनूल और आम	47

मणि वारा	अस्तित्व मे जीना है	48
रफीक अहमद उसमानो	क़त्लात	49
जगदीश मुदामा	श्वेत श्याम चित्र	50
भगवती प्रसाद गीतम	चादनी की गजल	51
मिथी लाल एम ओझा	व और ये	52
श्याम मुंदर भारती	असली तस्वीर	54
अब्दुल मलिक खान	निसके वास्त	61
मटवर पारीक "विद्यार्थी"	काम करो भाई काम करो	61
राम निरजन शर्मा ठिमाऊ	नमन करो स्वीकार	62
चनराम राम शर्मा	कुर्रुशे	64
टी० एस० राव राजस्थानी	मुद्दू पंडित बुद्धिमान	65
सध्याकिरण माहिल	छुले म सिमटता	68
सावर दइया	सुबह के सगुन	69
नेनाराम टाक	रोशनी के द्वार	70
सगीता झा	आज का नवयुवक	71
जमूतसिंह पवार	बाग़ धरती की कोछ से	71
अहमद रसीद मसूरी	शिशु की परिभाषा	72
त्रिलोक शर्मा	गीत	73
पुष्पा तिवारी	भारत माता	73
कुंदन सिंह सजल	गजल	74
गुलाम माहिपूदीन माहिर	गजल	76
सलीम खा फरीद	गजल	77
ओम प्रकाश सारस्वत	यह धरा तो हम सभी की	77
जनक राज पारीक	आख का शहतीर	78
हरिआम कुमार शर्मा	मौसम का बदलना होगा	79
कैलाश मनहर	लिखा, तो आदमी लिखो	80
पुष्पा रघु	अनुभूति	81
प्रेम प्रकाश याम	समंदर	83
मिखर प्रसाद बिस्वा	जीवन नाम नहीं जीन का	84
योगेश मिह माटा	अंतर का अनुराग चाहिय	85
हरिश्चंद्र सन	आज हमारे युवा मात्र सम्पाती	87
भागीरथ भागव	आजा	88
युनाकीदाम बावरा	ओ बंद ! जाना है अजिराम	89
नारायण वर्ण	पृथ्वी से सवाव	90

जगदीश प्रसाद आचार्य

रघुनाथ बतारा

रत्नकुमार शास्त्री

बृजभूषण चतुर्वेदी

शारदानुमारी भटनागर

जगदीश सन

पूर्णिमा शर्मा

रमा गुप्त

रमेश चन्द्र उपाध्याय

अरुमी रॉबर्ट्स

मोहन लाल जासी

जितेन्द्र

भूपेन्द्र 'तनिक'

जितेन्द्र

राम निवास सोनी

रमेश कुमार शर्मा

श्रीमाली श्रीवत्सल भाष

दीपचन्द मुधार

वासु आचार्य

कैलाश चतुर्वेदी

जितेन्द्र शर्कर यजाड

सीताराम व्यास 'राहगीर'

वीरेन्द्र कपूर

सरला गुप्ता

अजना भटनागर

ईश्वर लाल गार

प्रकाश तातेड

सुशीला भूषा

रूपसिंह राठी

बुतुबुद्दीन नदाफ

मुबान्त सुमि

धुआँ 91

दस जोड़े 92

नरम 93

गजस 94

पयावरण और सृजन 95

बटुसत्य 96

बसत और पतझड़ 97

साध 99

एक प्रतीक्षा 100

एक यमन शिला लेख/दपण और अक्षत 101

प्रीत शिखा 104

जीवन पूछे प्रश्न 106

मत करो 107

मरी अपनी आवाज 108

अहम का दश 109

सरसा 110

मौन चेतना 111

प्रतीक्षा 113

समस्त भाव 114

आरम्भ बाध 115

ध्यूह कसने दो 117

पेबन्द 118

प्रेम 119

अधेर से लड़ाई 122

स्नह और बदलता परिवेश 123

नफरत के बीज मत बोओ 125

अग्नि घम 127

शब्द साधना 128

जब से सिर पानी गुजर जायेगा 129

अहसास 131

भूख 132

गुलाम मोहम्मद खुरशीद	तबन्नीली	134
भोगी लाल पाटीदार	नीति	135
मेवाराम कटारा	यौतुकी और उत्पत्तीची ससृति	136
जगदीश प्रसाद मिश्र	मुहाग सिंदूर	137
रामनाथ मगत	दीप	139
श्याम तिमोही	समय सत्य	140
विद्या पालीवाल	ह्वाब	141

मन हुआ वृन्दावन

सावित्री परभार

दूर वशी बज उठी

मन हुआ वृन्दावन ।

ललछौंहो-नी

भार सदली

उलट गई अधियारी पतें

सीप चपई

सूरज बिरणे

बाध गया दिनभर की शतें

पाती सी छुल गई

धूप का छूबर चदन ।

खेता छलिहाना

म छलका

मीसम का वासती झरना

मधुमासी

बाहा म महका

सरसा का शृंगारित सपना

सूरजमुखी क्षणा की यादें

रचा गई दरपन ।

- ^

वात कस्तूरी

धूप का चदन
न मैला हो
हो न जाय उमनी सी
साझ सिद्धरी ।

द्वार छिड़की खुलेगी
मधु भार मधुवेगी
एक लम्बी यात्रा पर
चल पड़ेगा दिन
वस्तिया गलिया
सभी हसती रहे
चुभ न जाये दद का
काटा न कोई पिन

क्षण न हा शक्ति
न छाये अशुभ छाया
धिर न जाये तपन से
जागन मयूरी ।

रास्ते दुःख दद बाटे
पेठ बतियाए
गुलाबो से छलकत मन
गीत मौसम के सुनाये
चेतना अपनी
सिमटकर रह न जाये
इरादो के शिखर
पीछे रह न जायें

नेह भरे शब्द लेकर
बनें हम व्यापक समदर
रह न जाये मुझी कारी
वात कस्तूरी ।

मा की आखें

भगवती लाल व्यास

अधिया गई ह मा की आख
छाटी बहन की जुए बीनत
राशन के गृह म रत जोर बबर
साफ बरत
पिता की बमोज पतलून म
घटन दावत या उह बखिया बरत
अपन लिए पट-पुराने चिथडा
का गुल्हा बनात
छा के जान गुहारत
गाय के बछड़े के लिए
बडा गूथत
अधमूली लजडिया
जोर मममसाय बण्टा वाला
चूल्हा फूवत
जप्रिया गइ ह मरी मा की आखें
मनमापूरण महात्म की
कथा के माटे आग्रर बाबत
विश्वास की तरह ।

मा की आखें हमेशा
ऐसी नही थी
गजरा भी गूथ लती थी वो
गणगीर के लिए
जीजी की साडी पर
सलम सितार का
बारीक काम कर लती थी
वो रान भर जागवर
चिमनी के उजाम म
महली के पान फूल और
बूने कोर दती थी हूबहू

माहूँने भर की बहू-बेटिया की
 गुदगुदी हथलिया म
 सावन का सहूरिया आदवर
 मा जब झूले पर चढ़ती ता
 बाच लती थी उसकी आँखें
 सितारा म लिखी कविताए
 पिता के अन्तर्देशीय
 जा परदस से भेजे थे
 उ होन नौकरी न दिना म
 मा ने आज भी सभाल रखे ह
 बार बार पढ़ने के लिए
 मगर धीरे धीरे
 सब कुछ घुघलाता गया
 स्याही के लिबास की तरह ।

जब कुछ ज्यादा ही जधिया गई हैं
 मा की आँखें
 बहू स-जी वाले का
 अठनी के भ्रम म रपया यमा दती है
 कभी कभी
 ऐसे वकन म पाम खटी
 छोटी बहू बड़बड़ाती है—
 'मा जी, जब आप अनपढ़ है
 हिसाब किताब नहीं जानती
 सब लेन देन हम
 क्या नहीं सौंप दती ?'
 मा की छाटी छोटी
 गड़ढा म घसी जाखा म
 न आसू छलछलात हैं
 न शिकायत कौधती है
 न कोई उत्तर मचलता है ।
 वस मा की आँखें निर्विकार
 हा रहती ह
 मून आकाश की तरह ।

धरती राजस्थान की

चन्द्रमोहन हाडा 'हिमवर'

आओ मित्रो ! तुम्हें दिगावें झानी राजस्थान की,
इस प्रदेश के वण-वण में है गाथा गौरव गान की ॥
यह देखा मवाड उदयपुर लगता ज्या वज्ज्मीर ह ।
इसकी मिट्टी के वण-वण में पैदा होत खीर है ॥
अब विवास की सहर इसे नवजीवन द चमवाती है ।
गोज खनिज के नवयंत्रों से जनजीवन विवमाती है ॥
हल्दीघाटी में है सुरक्षित शक्ति नये बलिदान की ।
इस प्रदेश के वण वण में है गाथा गौरव गान की ॥

राणा प्रताप के शान की ।

भामाशाह के अनुदान की ।

यह धरती राजस्थान की ॥

यह देखा चित्तौड़ घटा गर्वोन्नत जिसका भाल है ।
स्वतन्त्रता की युग युग से जो धाम हुए मणाल है ॥
झगरपुर के भील सुखी, वासवादा सबको प्यारा है ।
अवरक का सिरताज आज भीलवादा सरस प्यारा है ॥
यह प्रताप की शान मान भीरा के निज अभिमान की ।
बलिदानों की अमर भूमि यह विजय पथिक के गान की ॥

बीरी के अभिमान की ।

नवजीवन ज्योति प्राण की ।

यह धरती राजस्थान की ॥

यह पाली, नागौर और जालौर का मस्तक ऊँचा है ।
बीरा की तलवारों के विक्रम से इनको सींचा है ॥
बाडमेर है सीमा प्रहरी, ज्योतिष जैसलमर है ।
गगानगर चूरु भी देखा विवसित बीकानेर है ॥
सुभग सिरौही हमको प्यारी आवूँ व अभिमान की ।
मारवाड का प्राण जोधपुर जय जय रेगिस्तान की ॥

दुर्गादास के आन की ।

जय रामदेव के गान की ।

यह धरती राजस्थान की ॥

युग युग स वहनी यह चम्बल बाटा अगर सुहाता है ।
 विद्युत की शक्ति से नव उद्यान का सरसाता है ॥
 पवनमाला स अवगुण्ठित बूंदी हमें लुभाती है ।
 झालर की झवारा स यह झालावाड बुलाती है ॥
 हाडोती वीरा की भूमि सूर्यमल्ल के मान की ।
 गौरव गरिमा स भण्डित यह धरती राजस्थान की ॥

जल विद्युत स उत्थान की ।
 नव नहरो के निमाण की ।
 कवियों के गौरवगान की ॥

असलर और भरतपुर देखा जिनकी शान निराली है ।
 टोन, सवाई माधोपुर स जगह-जगह हरियाली है ॥
 यह बजाज का प्यारा सीकर शुभ्र माता प्यारी है ।
 यह देखा अजमेर व पुष्कर शोभा जिनकी प्यारी है ॥
 भारत का पेरिस जयपुर राजधानी राजस्थान की ।
 जन जागृति में रहती अग्रिम धरती राजस्थान की ॥

वीरो के बलिदान की ।
 कवियों के अरमान की ॥

आओ मित्रा ! तुम्हें दिखावें झाकी राजस्थान की ।
 इस प्रदेश के कण-वण में है गाया गौरव गान की ॥

जय जनता के बलिदान की ।
 जय प्रातिधीरबलिदान की ॥
 नव जीवन जवाना प्राण की ।
 यह धरती राजस्थान की ॥



नफरत की खेती बन्द करो

नफरत स नफरत बढ़ती है और प्यार से प्यार उमड़ता है ।
 जो जलता है वह गिरता है जा हसता है वह चढ़ता है ॥

मृदु प्यार निभाने के यातिर,
जीवन में ज्याति जलती है।
कही रूप की कसर कयारी में,
नफरत की कलिया खिलती हैं।

सधम म सब कुछ घटता है, निर्माण में निशदिन बढ़ता है।
जो जलता है वह गिरता है, जो हसता है वह चटता है॥

जब रूप का दीपक जलता है
तूफान शिथिल हो जाता है।
तब पान की गंगा वा सगम,
जीवन जमुना से होना है॥

मुख सुमन बिहस हात नुसुमित, जीवन घन प्रतिदिन बढ़ता है।
नफरत से नफरत बढ़ती है, और प्यार से प्यार उमड़ता है॥

जिसका तन मन हो शुद्ध सरल,
वह सदा प्रफुल्लित रहता है।
दुःख-दद वासना से पीड़ित,
जीवन भर दुःख की सहता है॥

दुर्भाग्य म यशघन घटता है, सौभाग्य में प्रतिदिन बढ़ता है।
नफरत से नफरत बढ़ती है और प्यार से प्यार उमड़ता है॥

जन जीवन में तूफान तिमिर
मन विकल प्रकपित रहता है।
जब मानवता पर सक्क हो
कवि रोकर जग का कहता है—

नफरत की खेती बंद करा, फिर प्यार से प्यार उमड़ता है।
जो जलता है वह गिरता है जो हसता है वह बढ़ता है॥

^

10481
5-5-89

मौसम ने

रामस्वरूप परेश

बन का जितने दिये आयाम मौसम ने,
आदमी का हैं दिये कुछ नाम मौसम ने।

झर गई मुस्वान सारी पील पत्ता सी,
दद के ऊचे बिध हैं दाम मौसम न ।

कुछ उदामी से भरी दी भार मटमली,
इन्द्रधनुषी दी अनेका शाम मौसम ने ।

बिखरे हुए हैं पास पर कुछ आस के आसू,
कुछ का भाती से दिये ह नाम मौसम न ।

प्यार के सपने दिये कुछ मोठी मिथी से,
फिर दिये बडवे बहुत अजाम मौसम न ।

महना पडा है दद भी हमको जुदाई का,
बभी सुधिया के दिये तीरथ धाम मौसम न ।

हम न समझे नयन की भाषा तो क्या
कई बार अछरा के दिये पैगाम मौसम न ।

^

कुछ लोग

त्रिलोक गोयल

कुछ लोग—

बल होते है ।

दूसरों को छाया देने के लिये

स्वयं सारी धूप सहते है ।

फल बाँटने के लिये—

पत्थर खाकर भी चुप रहते हैं ॥

कुछ लोग—

दण होते हैं ।

जैसा प्रश्न वैसा जवाब ।
 बाटे व लिए काटा
 गुलाब के लिये गुलाब ॥

कुछ लोग—

बेपैदे में लीटे होते हैं ।
 इधर भी गुडक जात हैं / उधर भी खुडक जाते हैं ।
 सबकी ना में ना और हा में हा मिलाते हैं ॥
 ये समझीतावादी नहीं हैं ।
 निर्जीव हैं । नपुंसक हैं ॥
 हजारों वर्षों से वही में वही हैं ॥

कुछ लोग—

बहुत उयले हैं / बहुत गहरे हैं ।
 उनके पास तरह तरह के चेहर हैं—
 भाखें खुली हैं, बान बहरे हैं ॥
 गाल, चीकोर त्रिभुज हर खांचे में फिट हा जाते हैं य ।
 हर अवसर पर प्रसाद लूट लाते हैं ये ॥

कुछ लोग—

अडियल हैं, ठूठ हैं
 टूट जाते हैं पर झुक नहीं पाते ।
 खुद भी दुखी होते हैं—
 दूसरा को भी दुखी बनाते ॥
 सिर्फ में ही सही हैं / शेष सब गलत हैं
 यह अहम् यह दम्भ यह विश्वास ।
 अकड़ी हुई लाश ॥

कुछ लोग—

समय के साथ चलते हैं ।
 न छने जाते हैं / न छलते हैं ॥
 दखल देना या सहना इहे बतई नहीं है पसद ।
 जैसे स्वच्छन्द छन्द ॥
 अपने काम से काम ।
 जय सिया राम ॥

कुछ लोग—

वतमात्र म रहवर भी अतीन म जीत ह ।
भविष्य की चादर फाड़ फाड़ कर सीते है ॥
बीते हुय कल—
और आने वाले कल की रस्साकसी म
इनका आज मर रहा ह ।
भगवान जाने यह क्या कर रहा है ॥

^

टूटन

गोपात प्रसाद मुदगल

हमने कई तरह की टूटन देखी है ।
तुमने भी देखी होगी ।
मय देखत ह ।
हर भाव म,
हर कस्बे म
हर नगर में ।
टूटन ही टूटन ।
हर गली पर,
हर मोड़ पर
हर चौराह पर ।
जल में
घस में
नभ में,
टूटन ही टूटन ।
बल भी थी,
आज भी है,
बल भा रहगी ।
टूटन व्यक्ति में है

परिवार म ह
 समाज में
 हर दल में है ।
 टूटन ही टूटन ।
 अभी भी भी टूटा हूँ
 तुम भी टूट हा
 सब टूट है ।
 न बासब बचा है न जवान
 युवापे के आपन खूब सुने हैं बयान ।
 टूटन से छापटी बची ह न पाठी,
 न छेत बचा है न खलिहान,
 टूटन रा मौन बचा है पहलवान ।
 टूटन आती है
 आधी पी तरह छाती है
 बहर बहाती है,
 किमी किमी का ता साबुत ही निगल जाती है ।
 टूटन का पाम है—
 तोड़ना
 मराडना,
 मरझारना,
 रस को निचोडना ।
 मगर फिर भी
 कुछ सासें
 टूटन से टूट नहीं पाती है
 आस्था और विश्वास के हाथा
 टूटन के द्वन्द में भी उभर कर ऊपर आती है
 चीपडा में भी मुसकराती है
 ऐसी ही बालजयी सासें
 युगो युगो तब पूजी जाती है ।
 पीछे मुर्कर दख ला इतिहास गवाही है ।

शिकायतनामा

पुष्पलता कश्यप

तब उलझत है
 टकराव हाता है मुखिया उछलती है
 यह अच्छा है कि वह
 परमात्मा ने आदशा शिक्षाभा की पुस्तक
 यह है या वह या कि वह
 पगडंडिया अब भी सकीण कटीली और दुग्म ही है

सहरें उठती है
 फिर टकराकर बिखर जाती हैं
 शरार कभी कभी उभरते हैं वह भी जटमी से, बीमार से
 अस्तित्व आतंकित ह और अपने को निरापद नहीं पात
 विविधताभा के बीच एकता सूत्र
 असल में टूट कर छिटक गया है
 इस तरह कई मुक्ताएँ टूटती हैं
 और टूट कर बिखर जाती है

गेंगीन की दुग्म ध क आस पास
 कोई स्वास्थ्य बोध शेष नहीं
 मल्यु एक निश्चित नियति है
 जो रक्षक था
 उसे ही अब रक्षका की आवश्यकता होने लगी है

सब क्या है ? क्यों है ?
 कोई भी झुझला सकता है
 और मैं जागती हूँ
 यह सब शिकायतनामा
 प्रलाप से अधिक कुछ भी समझा नहीं जाएगा ।

कुछ ऐसा इन्तजाम हो

नवनीत कुमार व्यास

कुछ ऐसा इतजाम हा,
पैरो म रास्ता हा हापो म काम हो ।
चीत्कार, हाहाकार, बटूक तोपें,
छोडकर इहे आओ, धान रापें ।
दिग्घात युवा आक्रोश को
नव निर्माण का काम सौप ।
कुछ ऐसा इन्तजाम हा,
रास्ता ना रोके कोई, ना चक्का जाम हो ।
शूय न हो जाये सनाये,
सवेदना क भुपर हा म्बर ।
लाश डांती सम्पत्ता का,
अभिमान हो जीवन पर ।
कुछ ऐसा इ तजाम हा,
षडित वन ना कोई, ना काई इमाम हा ।
नही चाहता उतर जाय,
स्वग धरती पर ।
नही इच्छा समा जाय,
आदमी मे ईश्वर ।
कुछ ऐसा इतजाम हो,
आदमी आदमी हा, आदमियत का नाम हो ।

^

गजल

सगीर 'शाद'

क्या मेल खेलते हो हम बदनसीब दिल से ।
देखो निक्ल न जाए आहें गरीब दिल से ॥

मरी तवाही मुझको इस माट प ल आई ।
 दन सगा हुआ अब ता रखीव दिल से ॥
 नजा का दग्न से बनगा न आई काम ।
 बीमार इश्क हू म दया तवीव दिल से ॥
 बतारिया तुम्हारी मजदूरिया हमारी ।
 पोशीदा कुछ नहीं है दया हवीव दिल स ॥
 दुश्मन नहीं था आई दुनिया म मेरा लकिन ।
 ऐ शाद छाव जक्सर मन फरेव दिल स ॥

^

भारत देश हमारा

कैलाश चन्द्र शर्मा

हम सत्रही भाषो का तारा भू मडल पर सबस पारा ।
 भारत देश हमारा प्यारा भारत दश हमारा ॥

उत्तर मे गिरिराज हिमालय
 मुकुट बना सदिया स ।
 दक्षिण सागर चरण पखार,
 मिल जुलकर नदिया स ।
 पूरब स रवि बडे सपेर,
 आकर हम जगायें ।
 पश्चिम राजस्थान धरा
 जिसका कण कण इठलाय ।

भदमाती बलखाती बहती ब्रह्मपुत्र की धारा ।
 भारत दश हमारा ॥

गुजरात पञ्जाबी सिंधी
 बोने आई भाषा ।

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई,
सबकी यह अभिलाषा ।
इस धरती पर हम सब अपन,
सन मन धन औ प्राण सुटाये ।
इसकी गौरव गाथा मिलजुल
ऊँच स्वर से गावें ।'

गूँज उठे आवाज खोरखर लोकतन्त्र का नारा ।

भारत नश हमारा ॥

यह वीरा का देश यहा का,
जन-जन है उल्लिखी ।
हर धरुचा है वीर सिपाही
हर नारी अभिमानी ।
वही सदा मानवतावादी,
यहा सांस्कृतिक धारा ।
दत्त हूँ इन सबकी गवाही
गिरजाघर, मन्दिर औ गुम्बदारा ।

ऊँच-नीच का भेद मिटा, यो सबको दिया सहारा ।

भारत नश हमारा ॥

^

अकाल की छाया

विष्णु लाल जोशी

जेठ की दुपहरी
अगारे बरसाना मूरज
माय-माय करती हवा
बोझिल-सा वातावरण
टुकुर-टुकुर दण्ड रहा हूँ
प्रवृत्ति नदी की बहुरंगी माया

रोज मर्रा का सामान लादकर
 मैले बुचले कपड़ा को
 गठरी में बाधकर
 निक्कल पड़ा है काफिला
 साथ लिये, पशुओं की टाली
 चारे पानी की तलाश में
 दो जून रोटी की आस में

^

मेरी जिन्दगी

ज्ञानप्रकाश 'पीयूष'

मुझे ऐसा लगता है
 मेरी जिंदगी के भीतर
 एक और जिंदगी चल रही है
 और बाहर आने के लिए
 छटपटा रही है
 परिपक्व गभस्थ शिशु की भांति
 वह बायें से दायें और
 दायें से बायें
 ऊपर और नीचे हलचल करती है
 मानो अपने अस्तित्व का
 मुझे आभास कराती है
 मा की पीड़ा से अनभिन्न
 वह अवोध और पाक जिंदगी
 खेल-खेल में
 जब कभी
 गभ में निभम सात भार दती है
 तब त्राघ नहीं प्रत्युत
 नवीन अनुराग पदा करती है

बह राती है तब
 सबदना का
 एक नया ससार रचा देती है
 मर निजो पर
 बाह्य पुलक के क्षणा में
 आंतरिक व्यथा का सागर गहरा देती है
 बाहर आवर
 सगीत-सी
 जीवन में
 लय, ताल और मिठास
 घोल देती है
 सबदना, दद और पुलक स
 धिरी रहनी है
 मरी ज़िंदगी

^

तुम्हारी याद में

कमर मेघाडो

किस तरह हो जात है दिन उगस
 किस तरह दरमन के मूखे पत्ता की तरह/बिछुड़ जात हूँ साथ
 किस तरह मृत्यु
 लम्बी नहीं करनी सासा की डार

मैं सोच ही नहीं सकता/कि साथ साथ चसत हुए
 एक भयानक अघेरी रात में
 अचानक खो जाओगी तुम
 और मैं अथुपूरित नज़ा स
 निहारता रूग्ण/तुम्हारी मृत दह

क्या तुम्हारे और मर दरमियान
 बिय गय इतरार का अन्त
 अवेली लम्बी यात्रा का शकल म/सामन आयगा
 ऐसा ता मैंने स्वप्न म भी नहीं साधा था

कितनी दूर चली गई हो तुम
 मुझे बियावान जगल में भटकन के लिए/अकसा छाड़कर
 आज तुम्हारी यादा के नुक्कूश
 भरे दिल के नागूर बन गये हैं
 और हर लम्हा/दद का सलाव बनता चला जा रहा है

लेकिन बिल्कुल नहीं लगता
 कि तुम अब नहीं हो इस दुनिया में
 हमेशा यह अहसास बना रहता है
 कि अचानक किसी वक्त/चूड़िया खनकाती
 मरे सामन आकर खड़ी हो जाओगी तुम
 जबकि यह सूरज के उजाल की तरह सत्य है
 कि अंधेरे के साम्राज्य में खा गयी हो तुम
 और अब कभी लौटकर
 नहीं आओगी मर पास

^

व्यथा फूलों की

राम गोपाल 'राहो'

नदन बन म बहुतायत है ऊन खडे बबूलों की ।
 डाल डाल बेहाल हुई—यथा न यूँही फूलों की ॥

मौसम बदला ठहर गया पतझड़ धारह मास रहे,
मार मारे मधुप विचार उनके नहीं प्रवास रहे ।
धतियो का शृ मार नहीं है, जय-जयवार है शूलो की,
नदन वन में बहुतायत है, ऊँचे गड़े बबूला की ।

तेसा हुआ प्रयोग फूल के अकुर सारे नष्ट हुए
यह काट है लेकिन फिर भी वन, वही उत्प्लुट हुए ।
निर्माल्य व पात्र उपशित, टूटी बात बबूला की,
नदन वन में बहुतायत हुई ऊँच गड़े बबूला की ॥

^

गीत नए भोर के

वासुदेव चतुर्वेदी

गूरज
बीमार सा
पयराया
निडाल हो
पसर गया
गहन अधवार
तन मन
जड़ चेतन बा
लील कर
दद पी गया ।
जड़ चेतन
बेमुघ हा
मपना मे खा गया
मन का दुख

मुख का मूरज
 अधियार की आँखें
 न जा । बस
 गा गया ।
 सारा व पाँच । मे
 तार गारियाँ
 गा गाव
 बना मपरियाँ
 न नवर
 गाण दुख का महसान रह
 पहर
 जागन रह,
 बस न मूरज का
 नमा बरन
 अपनी कहानी
 मीन मुख कहत रह
 गाविल मन की बीणा
 पुरान गीता का
 दाहरा रही है,
 दस्तक
 नए मूरज की
 उपा का सि-दूरी आचल
 पहना रही है,
 न न भार के
 भूल बिसर गीत
 वह गुन गुना रही है
 तुम जागो पर
 दद माया मत जगाआ
 मन का अधियारा भाग जाए
 ऐसा गीत
 नए भार न सुनाआ ।

वचारा जगल

अरविंद चूरुखी

हरा भरा सुवासित है, ये कुवारा जगल
त्यारे । प्यारो से भी लगता है ये प्यारा जगल ।
इसका हर पेड़ दस बेटा के समान—
कोई धूले से न समये है आवारा जगल ।
हवा, पानी खुराक नेता सजीवन बूटी,
नीम मुर्दा के खातिर हैं अमरतधारा जगल ।
वृक्ष लगाओ इद्र बुलाओ रति पति हरपाओ
ऋषि का आश्रम जगल है, जागी का इकतारा जगल ।
पुंदरत माता, प्रभु पिता और हम सब बहना भाई,
परमा, परबत, सागर सरिता, सूर्य चंद्र तारा जगल ।
जगल बिना अमगल है सब, जगल स ही मगल है,
बजारे की नहीं बपीती, हम प्राण-प्यारा जगल ।
कालिदास जिस ढाल पे बैठा है तू उसको काट रहा,
'अभी समय है, चेत ।' सभी से कहता बेचारा जगल ।

^

स्वाद बतायेगी कविता

ओम पुरोहित "कागद"

जब जब भी
हलक के पिछवाड़े मरेगा आदमी
उसकी अगाड़ी
ज-म लेगी कविता ।
जो चीख चीख
सिंहनाद करेगी
कि अब कुछ सहन नहीं होगा

धिसटती दिग्गो वा
 मूष की मी यानी से
 मुक्क हाना होगा,
 और तब सब सथासा वा
 पत्ता पाट
 तन बर चलने वा
 स्वाद बतायेगी कविता ।

अपने अपने हिस्से के
 घाघा को धो
 सभी को मवाद मुक्त कर
 वण शब्दों की
 शब्द वाक्यों की
 वाक्य कविता की
 कविता जन जन की
 पवित्र म आकर बढेगी
 और फिर कविता
 महाभारत के बाद की
 ठही बयार हागी
 सब पूछिये
 वो कविता
 सदा बहार होगी ।

^

तक्षक नाग परीक्षित

अजभूषण भट्ट

हमन
 पढा था
 कि—

पोरणिक बाल म
 एक मधक नाग न
 इन्द्रामन का गहारा निया था
 नबि—
 आज, दग रह है
 बि—
 अनक सभक-नाग,
 इन्द्रामन का आग्रह ले रह है,
 और—
 फूल म छिपकर—
 परीता का बस रहे हैं
 और—
 हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं ।

\

आओ बीते अधियारो का हिसाब करे ॥

नन्द किशोर चतुर्धरी

आज
 बीत अधियारो का
 हम नयी सुबह म हिमाव करें ।
 ठिठुर फुटपाया पर
 बिछर साचार जीवन मे
 सदाय अहसास न
 बय बय बितन
 उमास भर ?
 विवशता की भहदी रची
 पसरी पसरी हथेलियो पर
 किसक बितने वमत भर ?

आओ इस नयी सुबह में
 उनका हिमाव करें ।
 राजनीति से घुघलाय आवाश में
 सत्य का सूरज
 वस्तव्य का वेतु
 ओमल होत होत
 अहंकार का अघ्य बन गया
 आओ बिना लजाय
 फैलाकर हाथ, वतमान का
 तलाश करें ।
 जानते हो
 गाव की गर्वीली पगडडियां
 सहम कर शहर हो गयी हैं
 और शांति ।
 कहीं किसी दल की दलदली
 कदरा में
 बीमार पड़ी है
 आओ उसका इलाज करें ।
 कितनी बार की है मैने
 अरज । अरणास
 पर तुम न उतर न आये पास
 तुम्ह अपना अनोखा सपना
 सच करना ह ।
 और मुझे अपना पेट भरना है
 वैज्ञानिक कृत्यों के जादू
 और पिघले अधियारा से
 उबरना है
 आओ इस नयी सुबह में
 शनै शनै जगनाते आदमी
 की बात करें ।

आती लगी है

परमेश की दुग ध !

अमृत म सराबोर

स्पर्श शिखर के नाभिक से

संत के छप्प वेश म

बीन फैकता है यूरेनियम के अणु

और

बीन कर दना चाहता है

अलबट आइस्टीन की

आत्मा का बिछड़न !

बीन मागता है

बगल म छुरी दबाकर

मुख से

मानवता के कल्याण की दुआ ।

हैं जलवायु

बता ता सही

आखिर तुझे क्या हुआ ?

^

सूर

सीमा

में

उदय होत

परवान

और ढलत

राज दखती

आने लगी है
प्रदूषण की दुगंध !

अमत म सराबोर
स्वर्ण शिखर के नाभिक से
सत के छद्म वेश म
कौन फँकता है यूरेनियम के अणु
और

कौन कर पेना चाहता है
अलवट आइस्टीन की
आत्मा का विखंडन !
कौन मागता है
बमल म छुरी दबाकर
मुख से
मानवता के कल्याण की दुआ !
हे जलवायु
बता तो सही
आखिर तुझे क्या हुआ ?

^

सूरज-सी जिन्दगी

सीमा पधार

मैं
उदय होत,
परवान चढ़े
और डलते सूरज का
राज देखनी हूँ

आने लगी है
प्रदूषण की दुगंध !

अमृत में सराबोर
स्वर्ण शिखर के नाभिक से
सत के छद्म वेश में
कौन फँसता है यूरेनियम के अणु
और

कौन कर देना चाहता है
अलबट आइस्टीन की
आत्मा का विखंडन !
कौन मागता है
बगल में छुरी दबाकर
मुख से
मानवता के कल्याण की दुआ !
हे जलवायु
बता ता सही
आखिर तुझे क्या हुआ ?

^

सूरज-सी जिन्दगी

सीमा पवार

मैं
उदय होत
परवान चढ़े
और ढलते सूरज का
राज देखती ॥

हर सुमन बना है जगारा,
हर कली वन गई दीप शिखा ।
कोयल की कूक बनी कवश
ऋतु राज गया ऋगार दिया ॥

यह दूर क्षितिज में छिपी हुई
छाया मुझका इमित कर द ।
मैं मौन रहूँ तू स्वर भर दे ॥

अध धूले पलक जल भरे नयन,
कहत अतीत की मूक कथा ।
लो झरना दनवर फूट पड़ी,
भरे जीवन की कर्ण व्यथा ॥

सरिता का आलिंगन पाकर,
निग्नर तन को कम्पित कर द ।
मैं मौन रहूँ तू स्वर भर द ॥

कल कल का गान सुना करके,
कल के सपना में घूम गया ।
पल भर को रोमांचित होकर,
मजिल पर आग घूम गया ॥

इन मदुल पला को कल्पित कर
काई मुझका हृदित कर द ।
मैं मौन रहूँ तू स्वर भर द ॥

कल की खुशियो में मस्त हुआ
तन झूम उठा मन मुस्काया ।
पर किस्मत ही रखा ऐसी,
सुग बीत गया कल का आया ॥

वीरान अघर में काई,
मुझका छूकर विचलित कर द ।
मैं मौन रहूँ तू स्वर भर द ॥

जलन ३ य पाव तब सोमि नही
आग को पूरे बदन पर मन मनो तो साथ आभा ।

पीर की बढती चुभन ॥ शक्ति नो
मुस्मान हाठा पर बढे दुगनी
एव प्रभा बिन्दु विचलित हो नही ।
तन मन अगर बरना पड़े छननी ।

भट्टियो मे बूदने की बात बरते हो,
इस्पात मे यदि बल सको तो साथ आओ ।

खुरदुरे फल या आदी बहुत हू मैं
फल चिबना बहुत तुमको चोट देगा ।
खाल दा अभिव्यक्ति के हर द्वार को
कुछ न बहना बहुत तुमको चाट दगा ।

मूक रहकर भी हृदय रखना सुखर
दीप की लौ अगर बसकर जल सको तो साथ आओ ।
मातनाभा का शिबिर मैंने लगाया है
पीर की पगडडियो पर चल सको तो साथ आओ ।

^

मजिल

गीतमसिंह परमार

मन की बीणा के तारो को
कोई आकर लुप्त कर द ।
मैं मौन रहूँ तू स्वर भर दे ॥

हर सुमन बना है अगारा,
हर कली बन गई दीप शिखा ।
कोयल की मूँव बनी कवच
ऋतु राज गया शृंगार दिखा ॥
यह दूर क्षितिज में छिपी हुई
छाया मुझका इंगित कर दे ।
मैं मौन रहूँ तू स्वर भर दे ॥
अध खूँये पलक जल भरे नयन
बहुत अतीत की मूक कथा ।
लो झरना बनकर फूट पड़ी,
मरे जीवन की वरण व्यथा ॥
सरिता का आनिगन पाकर,
निझर नन को कम्पित कर दे ।
मैं मौन रहूँ तू स्वर भर दे ॥
बल बल का गान सुना करके,
बल के सपना में घूम गया ।
पल भर का रोमांचित होकर,
मजिल पर जाग घूम गया ॥
इन मृदुल पला को कल्पित कर,
काई मुझका हर्षित कर दे ।
मैं मौन रहूँ तू स्वर भर दे ॥
कल की खुशिया में मस्त हुआ
तन झूम उठा मन मुझका ।
पर किस्मत की रेखा ऐसी,
मुझ बीत गया कल ना आया ॥
वीराम अधर में काई,
मुझका छूकर विचलित कर दे ।
मैं मौन रहूँ तू स्वर भर दे ॥

शहर

चमेली मिश्र

शहर में राटी
 ता मिल गई,
 मगर मकान
 नहीं मिला ।
 भीड़ में राह
 ता मिल गई
 मगर पहचान
 नहीं मिली ।
 पास पास रहे
 मगर मित्र तो
 नहीं बन सके ।
 एक ही दीवार,
 ताड़ नहीं सके ।
 तमाशबीन तो
 बहुत मिल गये
 मगर शव की
 शिनाटन के लिए
 चश्मदीद गवाह
 नहीं मिले ।
 शहरी जीवन—
 स्फेयर पाट स
 मिलकर,
 मशीन बन गया ।

अभिषेक

रामनिवास लुवाडिया

आधुनिक सभ्यता

(मग मरीचिका)

आकषण—

बन गया जीवन त्रासदी ।

व्यथित मन

करता क दन,

भटक रहा—

सुनसान में,

वीरान में

अंतर में लिए—

अनवुष्ट चुम्बन ।

फिर भी वह —

आस लिए

खाद रहा—

अस्तित्व भूमि ।

शायद कही,

प्रगट हो रत्न कोई ।

आभा से जिसकी—

छट जाए अधकार,

घम जाए अश्रुधार—

दुनिवार ।

और हा

एक बार फिर स

आत्म ज्योति स

चिर अमरत्व स

शाश्वत सत्य से

जीवन का अभिषेक ।

बबूल और आम

बबूल
और आम
दोनों यथाय हैं ।
प्रकृति की सौगात है ।
बस थ,
हैं और रहग ।

बबूल—
नफरत में पलत हैं ।
प्यार में सदब—
आम फलत है ।
स्नेह और प्यार ही है वह
जिसके अभिसिचन से
काटो सग फूल
और बबूल सग
आम फलत है ।

^

अस्तित्व में जोना है

मणिबाधरा

शिक्षक
आकाशीय आयाम से
सागरीय गहराई से
जहाँ न छुटपन
न बहा उथलापन
शिव एक साथ है
जिसे समाज स्वीकारना नहीं

उसके आइन में उपक्षित
 ठीक से कोई सहलाता भी नहीं
 पर बधु !
 नई पोछ
 नई पीढी की
 शाखें
 पाखें
 आखें
 दिग्भ्रान्त दिग्भ्रान्त दिग्भ्रान्त
 समय का आसव
 चाहे जैसा हा पीना है
 अतस में धुआ
 पर अस्तित्व में जीना है ।

^

करआत

रफीक अहमद उसमानी

तुम तो मानिन्द उस परिद के,
 जिसमें परवाज की नहीं ताकत,
 हा गए आप इतने क्यों मजबूर,
 सब भी कहने की ना रही हिम्मत ।

जब हवाया से आप डरत हैं,
 सामना क्या कराग तूफा का ।
 जि दगी दी है काम करने का,
 दन पहचानियगा इसा का ।

कितन चमक रहे हैं वेनूर य गीहर,
 इनका यहा वजूद क्या इनकी बिसात क्या ।
 द तो रहा ह राशनी जलकर व इक दिया,
 इन आधियो के दौर म पर एहतिपात क्या ।

वकते गम गैर ही नही ए दास्त
 साय अपन भी छोड दत है ।
 खुदपरस्ती की मय को पीकर व
 जाम रिस्तो के तोड दत हैं ।

बहुत की काशिशें तुमने मरी हस्ती मिटान की,
 मगर कुछ बात मुझम थी पशेमा तुमको कर डाला ।
 बहुत चाहा था तुमा फूव दू मर नशमन का,
 मेरे एहसान इतने थे निगहवा तुमको कर डाला ।

^

श्वेत-श्याम चित्र

जगवीश सुदामा

मटमल काँलम म
 हम स नम मौ
 आया व अल
 रग
 श्वन
 यादा स
 स

मुह अपना लिये हुए
जिन्गी को जिये हुए
माथ अपने लिये हुए
हाथ म पूजा की
पाशिया पवित्र ।

बदल से भरे हुए
अपन से डर हुए
जीत जी मरे हुए
बपडो पर छिडके है
भायातित इत्र ।

^

चादनी का गजल

भगवती प्रसाद गौतम

बल तलक जो थी बुआरी चादनी,
आज ह कैसी बिचारी चादनी ।

शहर से चल आ बसी इम गाव म,
धूल म पसरी दुलारी चादनी ।

नाज नपरे रख दिय सब ताक म,
छाटती अब खेत-बयारी चादनी ।

दाल रोटी पट न क्या माग ली,
ढा रही भर भर तयारा चादनी ।

आसती मुक मुक, धुए का कोसनी,
फूकनी चूल्हा हमारी चादनी ।

^

वे और ये

मिथीलाल एम० ओझा 'विश्वास'

एक समय था

जब

होसले बुसद थे

मीन तने थे

दात भोचे थे

भुटिठया कमी थी

भोह चढी थी

बाह फरकी थी

असि खडकी थी

इस देश की जवानिया

उमुक्त तूफानो नदी की तरह

चल पडी थी

देश हित

शहादत को मिलने,

इसलिए बि

देशवासिया के लिए

अन त की वद खिडकी

सदा के लिए खुल सके,

चिडियाभा की भाति

स्वच्छ द हा

चहक सके फुदक सके,

दाव पर लगे

अपन जम्मित्व के बदले

भविष्य की सुखद

सुबह शाम देख सक

घुटन भरे तिमिराच्छादित

वनमान के वस्त्रे

उज्ज्वल भविष्य का या सके,

घबराय के दवाचे गये जन

अपने राष्ट्र को

‘अपना’ बहने का साहस पा सकें

पर

जाज

अजीब हाल है हमारा

हमन उनके कार्यों का

रेत में पदचाप की तरह मिटा दिया है,

उनके अमूल्य रक्त की

कीमत को इतने ही में भुला दिया है,

उनके सुनहले स्वप्ना का

अनजान या गैरजान विसार दिया है ।

और

भाज की जवानिया

वनकर माली

अपने ही चमन को

उजाड़ रही है,

विखण्डता, मानव हत्या

और

वैमनस्यता का

रास रच रही हैं,

अपनी शक्ति को

अपनों से ही ताल

राष्ट्र को पगु बना

सीसमार का बन रही हैं ।

वे भी इस देश की

जवानिया थी

और

ये भी इस देश की

जवानिया हैं

अंतर

इतना भर है

कि

व

और

ये

वे और ये

मिश्रीलाल एम० ओशा 'विश्वास'

एक समय था

जब

होसले बुसद थे

सीन सने थे

दात भीचे थे

मुटिठया बसी थी

भोह चढी थी

वाह फडकी थी

असि खटकी थी

इस देश की जवानिया

उमुक्कन तूफानी नदी की तरह

चल पड़ी थी

दश हित

शाहादत को मिलने,

इसलिए बि

दशवासिया के लिए

अनंत की बंद खिडकी

सदा के लिए खुल सने,

चिडिया की भाति

स्वच्छंद हो

बहने सने फुदने सने,

एक पर लग

अपन अन्तिम के बंद

भविष्य की मुग्ध

मुखह शाम नये सने

घुटा धरे निमिराष्ट

बनमान के बान

उगज्जम भविष्य का

धराय य दबाव

मन गच्छे का ।

मन की बस एक आग
मन का बस एक राग
भूखे ह—भूखे ह

पछिया न
छोड़ दिया ह रैन बसेरा
साद न फेरी
स्वामी बाबा ने मठ
और नाथ ने डेरा ।

खेत—

सूने पड़े ह
हरियल नीम की जगह
ठूठ ाड़े है

भेद करना मुश्किल हो गया है
खाल में
और
छाल में

इस हाल में
प्रीत छकी वे बातें—
सावन की, फूला की
बागा की, फूला की
लहरात खेतों में
बचपन की भूला की
पनपट की छेड़छाड़
नदिया के कूलों की
मिमियात खूब की
रभाती गायों की
डकराती भसा की
लशा-परलशा की
पेसा की, बसों की
हाट की हवाई की
गगन जाट और

अमनी तम्बीर

श्यामसुन्दर भारती

पानी की
 लव लव बूद की तरलता
 मीला मील पतरा हुआ
 दमकता
 दहकता
 धधकता
 गुनगुना हुआ यह
 रेगिस्तान
 जिसकी
 लपलपाती लपटों की गाद में
 बसा हुआ है
 मरा गाव—
 भट्टी पर चढ़ी हुई
 हाड़ी की तरह
 सीज रही है वह
 मह
 नेह ताड़ चुका है
 छाड़ चुका है बाट
 हाट सून पड़ हैं
 मनुष्य
 जागवर
 और पेड़
 एक लिबास में खटे हैं
 खं खं करती हवा
 चौफेरू साय साय
 घर घर में सनाटा
 मसाणिया चुप्पी
 सूख गई बावडिया
 नाड़ी भी
 बेरे भी सूखे है

पदमिय गार्ह की
 जमी हुई आजम प
 चित्रम पर धरे हुए
 घघघन्त गीरे की
 गृदबन्त गीरे की
 झरझरने सीर की
 मावडिया ग्वार-फली
 बोर की मतीरे की
 बेन और बीरे की
 जापे की स्यापे की
 नाते की रिस्ते की
 आण की टाण की
 ब्याह और मुक्लावा
 लाव लेजावे की
 तारा से भरी हुई
 रगमीनी राता की
 हेत भरी बातें अब—
 नहीं आसपास है
 कल एक कहानी थी
 आज इतिहास है

(धरती है बाग्न और
 हिजडा आकाश है)

और उधर—
 घसी हुई खाट में
 अटकी हुई जो सास है
 इसकी भी एक कहानी है
 यह मेरे गाव की—
 भूतपूर्व जवानी है

लकिन—
 हे भगवानो
 हे अल्लाह!

अपनी दा महीन की लोथ की
अफीम की चुक ८ जाती है
ताकि वह चुप रहे
(या चुप ही हो जाय)

बनिया
आज भी उधार तालता है
बेचारा—
कुछ भी नहीं बालता है
उधार भी कितना है
फक बस इतना है
सामान लेने
पहल बापू जात थे
अब बिटिया जाती है
(बस—घोड़ा हक कर आती है)

हमशा डग डग हसता रहने वाला
बीसा बाबा उदास है
बात—
कुछ खास है
इस बार नीमली का
धोरिय चढ़ाने का विचार था
वह आग बढ गया
(सब ऊपर वाले की भर्जी है)
नीमली धोरिय नही चढ मबी
घोरा नीमली पर चढ गया

इस बार भी
हर बरस बनने वाली सड़क
फिर बन रही है
मर भाव म
अकाल राहत काय चल रहा है
चोफेर अघेरा ह

आमा—

तुमका मर गाव की
अदस्ती हालत बता रहा हू
जो नहीं देखी—
वह दिखा रहा हू
यह
मेरे गाव की असली तस्वीर है
यहा एक ओर—
राहत के गीत गाये जा रहे हैं
दूसरी तरफ
आदमी जानवर
और जानवर आदमी खा रहे हैं

आमा—

आमा और देखा
नगी आखो से ता तुम
देख नहीं पाओगे
अपने ज़मरे की आख से दखो
मेरे गाव की
मह तस्वीर
देखा—
इस गौर से देखो
और रग रोगन लगाकर
बाजार मे फेंको

खूब बिकेगी
मेरे गाव की यह
असली तस्वीर ।

किसके वास्ते

अब्दुल मलिक खान

उठ रहे य गर्दिशा गुब्बार किसके वास्ते ?
 कर रहा है बदन तीखी धार किसके वास्ते ?

फूल दुनिया न चुराये जिन्दगी के बाग स,
 राह म फँसा दिय है खार किसके वास्त ?

आदमी के दिल म ही हृदबन्दिया की हूँ हुई,
 चुन रह हूँ राज अब दीवार किसके वास्त ?

उस बिनारे की जमी पर हर खुशी उगन सगी,
 आसुओं की धार है इस पार किमके वास्त ?

फरियादिया का लग चुकी फासी गुजिना रान का,
 लग रह है और अब दरबार किसके वास्त ?

^

काम करो भाई काम करो

नटखर धारोक 'बिद्यार्थी'

एक बाग व पाई है
 सबकी महक निराती है ।
 काद भेन नही हूय म
 एक हमारा माना है ।

ममता का आह्वान करा ।

काम करो भाई काम करो ॥

सूरज के अनुयायी हैं
जगत और जगाते हैं।
आलस तम नजमीक नहीं,
आगे बढ़ते जाते हैं।

सूरज बनकर नाम करो।
काम करो भाई काम करो ॥

महान्त का अध्याय पढ़ा
सेतो औ' पलिहाना म।
श्रम की हे जय' सोया,
पथरीली चट्टाना स।

घरती का श्रमदान करो।
काम करो भाई काम करो ॥

जीवन में खुशहाली हो,
कोई भूखा रहे नहीं।
सबसे हित जीना मरना,
जाजादी का जय यही।

नव भारत निर्माण करो।
काम करो भाई काम करो ॥

^

नमन् करो स्वीकार

(रामनिरजन शर्मा "ठिमाऊ")

वीर प्रसूता भारत मा
सथद्धा हम नमन कर रही
नमन करो स्वीकार
नमन करो स्वीकार।

खेल बूद कर इस मिट्टी में
 हमन जीवन पाया
 हर भर तर आगन में
 सदा मिली है शीतल छाया ।
 तरी सवा लदय हमारा
 बाटि बाटि आभार
 नमन करा स्वीकार
 नमन करो स्वीकार ।

आज दश बी अखण्डता को
 बना हुआ है भीषण खतरा,
 पर रहगा भारत जब तक
 रहे धून का कतरा ।
 धर्मों पर जो बाट भारत
 उसका है धिक्कार
 नमन करा स्वीकार
 नमन करो स्वीकार ।

लक्ष्मी पन्ना, मावित्री का
 धून रगा में बहता है ।
 उनका बलिदानों की गाथा
 भू का कण कण कहता है ।
 जिए राष्ट्रहित, मरें राष्ट्रहित
 जन जन का उदगार
 नमन करा स्वीकार
 नमन करो स्वीकार ।

अग भिन्न है, दह एक है
 पर अग का काम नक है,
 घम जाति तो भिन्न भिन्न है
 पर राष्ट्र एक है दश एक है ।
 पेड़ एक है, तना एक है
 अलग अलग है डार

नमन करो स्वीकार
 नमन करो स्वीकार ।
 वीर प्रसूता भारत मा
 सश्रद्धा हम नमन कर रही
 नमन करो स्वीकार
 नमन करो स्वीकार ।

^

कुरुक्षेत्र

चैनराम शर्मा

कुरुक्षेत्र म
 धर्मराज दुविधा म हैं
 सच कह नही सकत,
 झूठ सह नही सकत
 समाधान नही कर सकेंग
 नरो वा कूजरो वा ।

छपा व्यूह है यह
 चक्र-व्यूह तही
 नही ता
 भदन कर लेता
 अभिम यु ही ।

यय ही हागी गदा की मार
 और अंसि की झकार
 यहा ता चाहिय
 बाण्डीव की टकार
 कि जिसस
 नही चढे ब घु-हत्या पाप

पर, उठ जाये सिर
 सिर फिरे जयद्रथा के
 और मर जायें उनके बाप ।

^

बुद्धू पंडित बुद्धिमान

—टो० एस राय० “राजस्थानी”

बुद्धू पंडित नाम रखा था,
 पर उनमें थी बुद्धि अपार
 उनकी बुद्धि और चतुराई,
 फैली अवसिदा के पार ।

भातें हवा बग से पहुँची
 विप्रम राजा के दरबार,
 बुद्धू पंडित की प्रतिभा की
 करें परीक्षा, हुआ विचार ।

और, उसी दिन पंडित जी का
 राजसभा में बुला लिया
 मोटी बिरली, गाय दुधारू—
 दकर उनका सुना दिया

महाराज को आज्ञा पंडित ।
 दल दोना का ले जाओ,
 चार माह तक दूध गाय का
 बिरली जी को पिलवाओ ।

महाराज की यह बिरली है,
 गर दुबली हो जाएगी,
 तुम्हें दूध का चोर मानकर—
 सक्त सजा दी जाएगी ।

अग भग का दड चोर को
महाराज श्री दत्त है
दूध चुरा पीने वाले को
जीभ कटा वे देत हैं ।

राजाज्ञा बुद्धू पंडित न
शीश नवाकर की स्वीकार
सकिन मन हो मन वे बोले—
बडी मुसीबत की करतार ।

और, साथ ले बिल्ली, गया
यही सोचते घर आए—
गया को वह पास खिलाते,
और दूध बिल्ली पाए ।

ऐसा कैसे हो सकता है
ऐसा होना है अपमान ।
ऐसा ही होगा ता बुद्धू—
बहुत सही है अपना नाम ।

रहे सोचत बुद्धू पंडित,
तरकीब फिर निकल आई,
डाला दूध कटोरे में फिर
नमक बहुत-सी घुलवाइ ।

बड़े प्यार स फिर बिल्ली को
उठा, गोद में बिठा लिया
और लपककर सभी दूध म
बिल्ली का मुह लगा दिया ।

फो-फो करती बिल्ली भागी
उछली कूदी गुराई
लेकिन उस दिन बाद दूध को—
देख नमक का घवराई ।

एक बार जा डरो दूध से
छाछ देख भी घबराती
पर बचपन से पली दूध पर
रोटी नहीं उस भाती

पड़ितजी अब बड़ी खुशी से
दूध दही छरकर खात ।
मूछा पर दे ताव, रोज—
राजा को शीश नवा आत ।

इसी तरह बस चार माह
हसते हसते बीत गए,
पड़ितजी ले बिल्ली गैया
राज सभा में आज गए,

राजा ने जब देखा, अपनी—
बिल्ली मरने-जैसी है,
बाले—पड़ित जीभ कटेगी
सजा यहा की ऐसी है ।

झूठ झूठ पड़ित आखा में
आसू ला कर यू बोल—
दूध न पीती है यह बिल्ली
फिर मोटी कैसे हो ले ।

अगर न हू विश्वास आपको
दूध पिला देखा जाए,
जीभ काट कर खुद रख दूंगा—
अगर वूद भर पी जाए ।

महाराज ने दूध मगाकर
बिल्ली का ज्यो दिखलाया
उछल मोद में बिल्ली भागी
सोचा दूध पास आया ।

राजा ने पंडित का देखा
और तथ्य को जान गए
बुद्ध पंडित की बुद्धि का,
चतुराई को, मान गए ।

छुग होकर राजा ने उनका
ज्ञानी पंडित नाम दिया,
और बनाकर अपना मंत्री
पूण मान-सम्मान दिया ।

^

खुले में सिमटती दूरिया

सध्याकिरण मोहिल

आओ
दूर चलें,
नगर से बाहर, पाक के किसी कोन में ।
जहाँ किसी की आवाज सुनायी न द
जहाँ कोई और न हूँ,
सिफ हरी, कोमल घास हो—
ठंडी हवा हो और दूधिया रौशनी हो ।
जहाँ 'अपन' घंटो बैठकर
मन की ग्रथिया खोलेंगे, बतियायेंगे ।
क्योंकि—

इस मायावी जगत से
इतने अनुभव लिय है कि
अगर एक दूजे को न सुनायें तो
लगता है हम शायद बहक जायेंगे ।

अत

आज के इस असगाव भरे माहौल में,

काटती खामोशी में
 आवश्यक हा गया हूँ बि—
 एक दूसरे का समझें, पहचाने और
 मन के सारे भाव उठेल दें ।
 बस !

सगता है यही ता आज जिन्दगी के 'निकट' होने का
 रास्ता भर नजर रहा है ।
 अत आओ,
 दूर चलें, नगर से बाहर
 पाक के किसी कोने में ।

^

सुबह के सगुन

सावर बढ़या

सूरज दे गया
 दरवाजे पर दस्तक
 खिड़की से आकर गिरा
 आगन में अखबार
 हटाए
 आगजनी
 बम विस्फोट
 अपहरण बलात्कार

य तो हैं
 सुबह के सगुन
 बीतने का बाकी
 पड़ा है अभी तो सामन
 पहाड़ सा दिन
 पहाड़ सी रात

^

रोशनी के द्वार की ओर

नेनाराम टाक

इस हालात में तुम वसमसाओम नहीं—

पत्तों के नीचे दब पफोल का

फूट जान दो

रक्त के साथ बहेगा मवाद भी

दद की इस सड़ाई में तुम अकेले नहीं हो

अपना चश्मा चढाओ,—और देखा

बहा है तुम्हारा सौंदर्य ?

तुम्हारी भावनाएँ बँद हैं

किसी टायर की हवा की तरह

आश्रय ढूँढने की कमजोरियाँ

कब तब करती रहेंगी आश्वस्त ?

पिछड़ापन छाया की तरह लगा है क्यों ?

वचित होकर भी

अपराध तुम्हारे सिर है

अकेला सच ताबान में होता है सबल

किरण तुम तक नहीं पहुँचेगी—

जब तक कि भुजाओं को न फैलाओगे

झीड़ी बरागे न छातियों का

जब तक कि—

छितरा जायेगी रोशनी की किरण

तुम सच्चाइयों को एकाकार करो

रोशनी के लिए सघप में

उत्पीड़न का समूचा वेग लिए

घुटेगा आखिर किनारा

ज्वार की ओर बन्ते चला

बढते चला

किनारे आप ढूँढ़ेंगे तुम्हें

द्वीप नये बसायेंगे तुम्हें,

आज का नवयुवक

सगीता झा

अमायस्या व' अनन्त अधवार का,
 गहन अधवारमय भविष्य ।
 किसी साधार अवाहिज सा,
 सगडाता वतमान ।
 बीत गुनहरे स्वप्न-सा
 सुगुदाई भूत ।
 इन सब म दबता पिसता निराश
 नेत्रहीना सा टटोलता अपनी मजिल,
 अपना घर ।
 अब तब यू ही चलता रहेगा दिशाहीन
 आज का यह नवयुवक ।
 देश का वणधार ।
 आखिर
 अब तब देखता रहेगा ? झूटे स्वप्न ।
 अब तब टटोलता रहेगा ? दिल के जड़म ।
 देश का यह भावी भाग्य विधाता ।
 आखिर अब तब ?

^

वाझ धरती की कोख से

अमृतसिंह पवार

वाझ धरती की कोख से
 जय एव बीज
 फूट निकले ता
 समझना

अब अवश्य एक
 भीमवाय वृक्ष जन्म लेगा ।
 वह लहरायगा
 उसने पत्तो भ हरियाली होगी
 उसकी डालो ने फूलो मे
 खुशबू और फला मे
 रस होगा
 तब वह बास नही होगी ।

^

शिक्षक की परिभाषा

अहमद रशीद 'ससूरी'

ज्ञान का दीप प्रज्वलित करता ।
 शिशु रूपी पीछे को—
 सींच सींचकर—
 एक फलदार वृक्ष उगाता ।
 शिष्टाचार क्षमाशील व कमयोगी—
 स्वतन्त्र राष्ट्र में बहुलाता ।
 सारा जीवन गरीबी एवं
 कष्टों में बिताता—
 इस युग में—ईश्वर ही है ।
 जिसका रसक ।
 उसको कहते हैं—
 शिक्षक ।

^

गीत

त्रिलोक शर्मा

बचपन की भाली बोली सा भोला मेरा गाव,
सोने जैसी धूप है जहा पर चदन जैसी छाव ।

शहरो के दिल में पलत हैं नफरत भरे विचार,
यहा गाव में अब भी चलता प्रेम भरा यवहार,
होली, ईद, दिवाली होती एक साथ हर ठाव ।

धोखा और धुआ नगरो के आभूषण कहलाते,
मगर गाव में आपस में ही सुख-दुःख बट जाते,
यहा नहीं जमने पाये हैं धूना, हरेप के पाव ।

तुलसी की चौपाई में हल हात कठिन सवाल,
मगर शहर में फोट कचहरी के हू खडे बवाल,
सीधी-सादी राह हमारी यहा न टेढ़ दाव ।

सेतो में अलगाजा बोले पनघट पर गागरिया,
धूयट धूयट नयना नाचे पग-पग पर झामरिया,
माटी के सालह श्रृंगार की शोभा हर दम गाऊ ।

^

भारत माता

पुष्पा तिवाड़ी

भारत माता सुत हम तेरे, करते बारम्बार नमन ।
तेरी चरण धूलि का हम सब, माथे लगा करें वदन ॥

हम गव है मातृभूमि पर,
 जिसन हमका जन्म दिया।
 आज दिया देंग हम उनका,
 जिसन मा पर बार बिया।
 बमों व योगी है हम सब, बहलात तर माह्न।
 भारत माता सुत हम तर करत बारम्बार नमन॥
 मातृभूमि की रक्षा धार
 कर देंग हम सभी समपण।
 प्राणा से प्यारी घरती पर,
 तन, मन, धन कर देंगे अपण।
 शस्य श्यामला व हर वण म बिछा दिय हैं मधुर सुमन
 भारत माता सुत हम तेरे, करते बारम्बार नमन।
 भारत माता के चरणों म
 शीश झुकाकर करें वंदना।
 हर तन म ऐसा बल भर दा,
 रिपु का हम सब करें सामना।
 वीरो की इस पावन भू पर, गिला दिय तुमने उपव
 भारत माता सुत हम तेरे, करते बारम्बार नमन

^

गजल

कुदून सिंह सजल

जब कभी तेरी गली से लोटकर आते हैं, ला
 बेवफाई बेइस्वी की बात दोहराते हैं लोग

सत्य की ऊँचाइया मे आजकल यह सत्य
 सत्य को भी सत्य कह पान से बतराते हैं, लो

फेलने को है खुला आकाश है चारो दिश
 गपनी करतूतो से लेकिन खुद सिमट जाते हैं,

एक युग था जब बदलती थी जमान की हवा—
अब हवा बदले न बदले, खुद बदल जात है, लोग ॥

खुद दुखी हो ता करे उम्मीद कोइ साथ द—
दूसरो का दुख कहा लेकिन समझ पात है, लोग ॥

साधन को स्वाथ अपनी कामनाओं के लिए—
तोड़कर इंसानियत की हद गुजर जाते हैं, लोग ॥

दोस्ती तक, बेहयाई से 'सजल' परिचय बढ़ा—
अब कहा इंसान की मानिंद शरमाते है, लोग ॥



गजल

टूटते हैं जब कभी विश्वास मेरे ।
स्वाथ तब आते नहीं है पास मेरे ॥
बारहा आकर भुलावे मे जमी के—
छा गये अक्सर कहीं आकाश मेरे ॥
जब कभी भूगोल न बदलाव ओढ़ा—
ढगमगाकर रह गये इतिहास मेरे ॥
अब सुकू देती नहीं आकर बहारें—
मीन हैं कुछ सोचकर मधुमास मेर ॥
चाँद ने इतना छला है चाँदनी से—
अब मुखर हाते नहीं बातास मेरे ॥
प्यार से लगकर गले महगाई बोली—
आप ही तो आदमी हैं पास मेरे ॥
रग लाएगी प्रतीक्षा की प्रधाए—
आस से बघन लगे अहसास मेरे ॥



गजल

गुलाम मोहियूद्दीन माहिर

बुरा या भला हा मताना बुरा है
 किसी के भी दिल का दुखाना बुरा है
 फलाना बुरा है फलाना बुरा है
 किसी पर ये तोहमत लगाना बुरा है
 जरा सोचकर पाव घर से निबालो
 जमाना बुरा है जमाना बुरा है
 जहां रात दिन बिजलिया कौंधती हो
 वहां आशियाना बनाना बुरा है,
 रहे याद तुझको सदा दोस्ती मे
 के कमजफ से दोस्ताना बुरा है
 हकीकत को अपनी छुपाने के खातिर
 किसी की कसम झूठी खाना बुरा है ।
 तुझे काई देखे तू नजरें चुराये
 किसी के यूँ अरमा मिटाना बुरा है
 रहे काई खामोश आखिर कहा तक
 सितम पर सितम भी उठाना बुरा है
 शराफत नहीं बुजदिली है सरासर
 सच्चा बेगुनाही की पाना बुरा है ।
 जिन देपकर दूसरे बदगुमा हा
 खुशी म भी यूँ मुस्तुराना बुरा है ।
 ये दावा हैमेरा ना कुछ होगा हासिल
 कोई हो गम दिस बनाना बुरा है ।
 कोई चाह चाह वहां भी ऐयमाहिर
 मगर रोज का आना जाना बुरा है ।

गजल

सलीम खा फरीद

कौन से क्षण हा बवण्डर कौन जान ?
पी गई सफरी सम-दर कौन जाने ॥

हम जिसे बरसात कहते मुग्ध हा के—
या कि रोया हा पुर-दर कौन जाने ॥

एण की तश्रा लें तद्विल होइए मत—
आएण गजनी सिक्-दर कौन जाने ॥

मै सदा हसती नदी सा ही दिखू हू—
बदना के सि-धु अ-दर कौन जाने ॥



यह धरा तो हम सभी की

ओमप्रकाश सारस्वत

देखकर मधुपव को भी,
मन मेरा क्यों रा रहा है,
क्या कहूँ किससे बहूँ—
इस दश म क्या हो रहा है ।

नित, नये हिमाचरण स,
आज मा अपनी प्रवर्णित,
आज सब सम्बन्ध पीडित—
आज 'भार्द्वा' शब्द शक्ति ।

जिस गगन ने इस घरा का,
 देव विपदा से उबारा,
 खून में उसको नहाया—
 देख, नभ टूटा बिचारा ।

आग का दरिया घणा है,
 प्यार सावन की फुहारें,
 नफरतें काटे चुभाती—
 प्यार लाता है बहारे ।

इसलिए मैं' को मिटादे,
 यह घरा तो हम सभी की,
 फूल सबके, खुशबुएँ भी—
 और यह शवनम सभी की ।

यह घणा दिल काट देगी,
 आख में बाधा बनेगी,
 प्रेम की धारा पलटकर—
 कृष्ण की राधा बनगी ।

^

आख का शहतीर

जनक राज पारीक

लिख मरे वरागो मन
 समय ने श्वेत-यज्ञ पर
 एक शब्द हीन भीत,
 एवं स्वर-हीन चीख लिए
 बि शब्द अपनी अथवत्ता रंगो चुने हैं
 स्वर-सवाहक वायु तरंगों

नजर बंद है,
 तरी अतहीन उठान के लिए
 आकाश नहीं है
 ओर तू जानता ह
 कि जनवरत समाधि के लिए
 तरे पास अबकाश नहीं है
 इसलिए
 एक कण भेदी मौन
 एक मम भेदी पीर लिख
 दृष्टियों पर राज रोग
 लग गये जिनके
 उनके लिए
 आख का सहतीर लिख ।

^

मौसम को बदलना होगा

हरिओम कुमार शर्मा

प्रारंभ में लगता है
 आकाश में धुआं चढ़ने लगा है
 पवत की कोख से उगन लग हैं
 जगली पीछे—
 और मौसम जैसे किसी
 बिना बुलाय मेहमान की तरह आकर बैठ गया है
 घर की देहलीज पर
 धीरे धीरे मौसम उगलन लगता है आन्ध्र
 आदमी/पशु/और फसल पर छोड़ जाता है
 एक वर्षापाती/पुलमती/जबड़न/
 अमरखेल की तरह अघर सटकने हुए
 इस मौसम को/बदलना होगा

किसी महासूय द्वारा/
 जिसने यह किसी गरीब झापड़ी में धुमकर
 तबाही न कर मके ।
 और बारूद उगलने के बजाय
 उगल सके खुशिया के कमल ।
 जिससे वन्तावरण मधियाता रहे
 एक अरसे तक
 एक अन्तराल तक
 हमें इतजार है उस दिन की
 जब यह मौसम परिवर्तन
 एक नया उत्साह
 एक अजूबा आनंद देगा ।

^

लिखो तो आदमी लिखो

कैलाश मनहर

मत लिखो दुःख,
 मत लिखो सुख ।
 दद मत लिखो,
 चन मत लिखो ।

आशा, निराशा, खुशी या उदासी
 मत लिखो पतयड या बसत,
 लडका या लडकी,
 किताब या कलम,
 पक्ष या विपक्ष
 घम या अघम ।

मत लिखा, रात या अघेरा,
 मत लिखो सूरज या सवेरा ।
 पर लिखा,
 निखना जरूरी हो, तो लिखो ।
 आत्म स्वीकृति हो, तो लिखा ।

लिखो, साहस,
 शक्ति, लिखो,
 लिखा धैर्य
 सताप लिखा ।
 लिखो, लिखा, खूब लिखा,
 लिख सकत हो, ता आदमी लिखा ।

^

अनुभूति

पुष्पा रघु

एक
 दवा है कभी ?
 सूती बिघावान बजर उजाड
 जमीन को ??
 युगा स आख फाटे
 दूर दूर को तरसती
 उसकी चटकी हुई छाती पर
 भूला भटका काइ ठूठ
 ढह गया जा गत मे
 ऊपर का उठी उसकी आग्राए
 दग ताडन मुफ्तिस टसान की
 ह्येलिया की तरह

खुली ही रहती है
जगिरी उम्मीद में
शायद कोई चमत्कार हो जाय । । ।

दो

सुना है कभी ?
अपन नहो के लिय चुग्गा ल जाती
मासूम चिटिया के
कफ़म में फसकर
छटपटाते तडफडाते रदन का ??
लोग करुणा कर्म को
सराहते है समझ गीत
देकर अगूर दाख
उसको नवाजत
वा कहा पाती है
ध्यान कर खुली चोचा का ।
घुट जाग आवाज
उससे पहले दुआ मागती है—
पूरी सासो व साथ
जाने दो मुने ।
दिल व टुकडो के पास । । ।

तीन

महसूस है कभी ?
उम घुग घुटन का
सिगो छानी में जा
गुनगता ३ जब

एक भला चंगा मानुष
 धुना धुआ हो जाता,
 जो था कभी
 जिंदा उम्र से भरा
 सीधा सादा,
 गलत समझ उस
 जब दुरदुराया जाता है
 सब रिश्ते-नात
 प्यार आ 'रगोनिया
 झुलम डालत है
 बनकर चिमारिया
 बजूद तब उठता है जल
 दौबना पान निजात—
 और भी भड़क उठती आग
 रह जाती है बस —
 एक मुट्ठी राख ।

^

समदर

प्रेम प्रकाश व्यास

दोस्त ।

अनुभवा का नीला समदर
 ओर उस पर यह तरती सवेदना की नौका,
 कभी कभी ता नगता ही नहीं है कि
 इन सभी धाराओं का यह सह पाएगी,
 पर है बदस्तूर टिकी हुई यह भी
 ठंडे नम्बे रास्ता के पार,
 या कि चादनी में सुनसान सन्का पर चलत,

खाज हुए मम्ब धा व धाग
 अब भी इस कदर उलझ ह,
 कि न ता दाता से खुलत ह न हाथो स ।
 और उलझा के गुच्छा को हाथो म सभाले हम,
 खुशी का एक नकली समदर बनात ह ।
 नीला ।
 इसम तैरात ह य
 नौकाए और घुस हात ह,
 य डूबती क्या नहीं ?
 भसा पत्थर की मूरता भी हसी
 राने म कभी बदली ह ।



जीवन नाम नहीं जीने का

गिरधर प्रसाद बिस्वा

दुक्त जा पुरपाथ सामने
 भाग्य भाग्य व चिन्ता है ।
 दिन पारप व भाग्य न फसता
 व दर दर भटक खात ह ॥

अपन निज का भाग्य विधाता
 हर मानव ही बन सकता है ।
 कम कर रह मरे साथी
 पोरप न विधि का जीता है ॥

भाग्य हमारी मजिल है, तो
 पारप ही मग बहलायगा ।
 माप सबे जा नहीं राह को
 पुरप नहीं बह बहलायगा ॥

जीवन नाम नहीं जीन बा,
जीत पशु पक्षी मार है ।
जा पुरुषाय करे जीवन मे
महापुरुष वे है ॥

भाग्य और पुनपाय बने हैं,
प्राण चक्र के दो आयाम
स्वस्थ पुरुष वे जाने जाते
जो करते श्रम का व्यायाम ॥

जीवन मरण सदा विधि के वश
नहीं कभी चिन्ता की बात ।
जीवन को पुनपाय बनाए
इसमे विधि का क्या है साथ ॥

^

अतर का अनुराग चाहिए

योगेन्द्र सिंह भाटी 'योगी'

अभिशापो मे शापित जन को
पावन मन का प्यार चाहिए
घोर अंधेरे मे भटके को
आशा का उजियार चाहिए
जड़ताशा से उस्त मनुज को
चिर अनय चिराग चाहिए ।
अतर का अनुराग चाहिए ॥

जिमवे पय म बाट हो हा
 फूला का उपहार चाहिए
 बुठाआ म कुटिल मन को
 मन का मधुर दलार चाहिए
 ऊब चुका जो अध निमिर से
 उसको राग विराग चाहिए ।
 अतर का अनुराग चाहिए ॥

खोले जा अतर की आखें
 ऐसा नय आलोक चाहिए
 छाल सबे जा मन की पायें
 ऐसा पावन लोक चाहिए
 ताड़े जा सशय की कारा
 वह विश्वासी राग चाहिए ।
 अतर का अनुराग चाहिए ॥

मयधारा के माझी को तो
 तट का सुंदर ओक चाहिए
 डूब रहा हा जो जीवन म
 तिनक का सजोग चाहिए
 पीडित मानवता को 'योगी'
 स्महित मन बंदाग चाहिए ।
 अतर का अनुराग चाहिए ॥

^

आज हमारे युवा मान सम्पाती

हरिश्चन्द्र सेन

यदि अतीत का पुन युवा, मर दाहरालें,
धूमिल पद चिह्ना की माटी पुन हटाल ।
नई दिशा को राह मिलेगी सदा प्रवृत्ति से,
सम्भव हाथा मिलन पुरुष का सद्य विवृति से ॥

अधुनातन से नहीं रहा है, ऐय पुरातन,
गौरव जिसन दिया बड़ा का छोटा आनन ।
अमर पुरातन सदा रहा, अभिराम सुसागर
बुढ़ाभा से शून्य छिपा ह नहीं, उजागर ॥

इस युवा अपरिचित, अधकार म क्या है डूबा,
आक्रासित, सन्तापित मन से, प्यासा भूया ।
विकट समय ह, मानव को मानव ही खाये,
अन्तरिक्ष म बैठ मृत्यु का, भय दिपलाये ॥

अन्तरिक्ष शोधन ह नहीं ब्रज का लोडन,
रुख बदलाय हवा का, नहीं पथा का मोडन ।
नहीं भीतिकी ज्ञान, हमारा बढ पाया है,
हमने ता केवल अतीत को दाहराया है ॥

सीर परीक्षण म सम्पाती, दखो हारा,
सीर क्षेत्र पथ ग ही जला तेज का मारा ।
अध कच्चे हैं आज हमारे य सम्पाती
अपने मद म चूर बन रहे आत्म निपाती ॥

खुला आवरण रहे, पापी को डेरा मत दो,
मानवता के लिए समर्पित, जीवन कर दो ।
ऐसा अपना ध्येय आज के युवक बनाले
धूमिल पद चिह्ना की माटी पुन हटाल ।
नई दिशा को राह मिलेगी, सदा प्रवृत्ति से,
सम्भव हाथा मिलन, पुरुष का सद्य विवृति से ॥

आओ

भागीरथ भागव

आओ, आऽ ओ SS आ SSS ओ
 अरावली की इन पहाडियों में आओ
 इन सर्पिली घाटियों के
 इन तम गलियारा में आओ
 पहाड़ी पर बिछे इस कापेट की
 शीतलता में रम जाओ
 महा अब भी झरन-सी
 निरंतर झरती है खिलखिलाहट
 फिर उसकी गूँज अनुगूँज
 ममूची घाटी में बस बस जाती है ।

आओ, आऽ ओ SS आ SSS ओ
 सरपट दोड़ती भीटी बजाती
 अनुराग भरे गीत गाती
 बसुंध, पगली हवा तलाशती है
 वही वही वही गध ।
 मौन में बड़बेरिया लाल लाल
 उचते हैं ये झाड़, ये गाछ
 पपझाय हाँठों से करते हैं बात,
 जान कहा ? जाने कहा ?
 अब वह कहा ?
 वही-वही वही गध ।

आओ, आऽ आ आ... ओ
 उगते सूरज से आगें लडाओ
 झील में गिरते सूरज से रगाओ
 छाड़ गया जा बिदिया—
 क्षितिज पर वह
 माथ पर उसे सजाओ ।

सो बजरार मघा आय ह
 नीली झील पर छाये है
 गोर तन को बचाओ
 सब भोग भोग जायेगा
 समूचा तन दरस जायगा
 मन उमग उमग
 सरस-परस पायगा ।

आभा, फिर आओ ।
 सारा धन प्रान्तर—समूचा गिरि अन्तर
 दता तुम्हें झुला निमग्न
 आभा, फिर फिर आभा
 बार-बार आभा
 उमुक्त प्रकृति की हरीतिमा म
 छिप छिप जाभा
 गीत प्रीत के गाओ ।
 आभा, आ ॐ ओ, आ ॐ आ ।

^

ओ बन्दे ! जीना है अविराम

बुलाफीदास 'बाबरा'

तेरा जग तुझको निहारना पग पग तेरा पथ बुहारता ।
 अपने को पहिचान ओ बन्द ! जीना है अविराम ओ बन्दे ।

तेरा मूरज तुझम रमता ।
 तेरा चन्दा तुझसे बनता ।
 रग बिरंगे चित्र अनेका ।
 तेरा रूप तुझी से बनता,
 बिधर रहे तेरी सीमा मे भीर दुपहरी, शाम ।
 ओ बन्द ! जीना है अविराम ॥

तू कारण है अपनपन का,
 तू जीवन है घरा गगन का
 तेरे मन का तू ही माहिर—
 तू ताना है तीन भुवन का,
 तीन गुणा के इन रेशा में, तरा रूप तमाम ।
 ओ बन्द । जीना है अविराम ॥

तेरी आभा तुझे सवारे
 ज्योतिमय ओ जग के द्वारे,
 तू अपनी आवाज स्वय है—
 तेरी स्रष्टि तुझे पुकारे,
 ज्ञान स्वय में एक बार, तू धिर चिन्तन सग्राम ।
 ओ बन्द । जीना है अविराम ॥

तू जा भी निष्कप निकाले,
 बाह्य जगत बस उसको ढाले,
 भीतर बाहर का सेतु बन—
 एक बार सचाच हटा ले,
 मर कर भी तू मरा भला जब मृत्युञ्जय मुखधाम ।
 ओ बन्द । जीना है अविराम ॥

^

पृथ्वी से सवाद

नारायण कृष्ण 'अकेला'

फिर खिल उठा है अमनतास
 अपराजित महत्वाकांक्षा से आप्लावित
 अग्निधमा
 स्वर्णम आभा से गुलकिनी
 प्रमुदिन

फूल पत्ती-टहनी—
 अनन्त दीप्ति स आलोकित
 पथ्वी ।
 क्या इसी तरह
 तुम करती हो शृंगार ?
 छेड़ती हो निजन म
 मन माहनी सितार ?
 दूधिया चादनी म नहानी हो ।
 निज छवि पर
 रीच रीझ जाती हो ।
 यू ऋतुएं आती हैं
 फूलों म सजाती हैं तुम्ह
 नुम रूप गयिता
 अप्सरा-सी
 प्रतीक्षारत
 फव से खड़ी हो
 अपनी जिद पर
 • डी हा !

^

धुआ

जगदीश प्रसाद आचार्य

कभी कभी
 अथवा
 प्राय औपचारिकतावश
 या
 स्वभावतः
 शब्दों स निर्मित
 परिभाषाओं से बघी

अर्थों की अर्थों
 समझ की चिता पर
 अनुभव की जगिन में
 जगत्कर इस तरह—
 'जीवन' का 'धुआ' देने लगती है
 जैसे—
 अतीत की सूखी लकड़ी से बना
 वर्तमान का बुरादा
 भविष्य की जलती हुई
 भट्ठी में डालने पर
 'समय' का 'धुआ' देता है ।

^

दस जोड़े रघुनाथ घतरा

जीवन तू का बीज रही बस उखड़ी उखड़ी सास ।
 बाटा उलझा, निकल न पाइ बड़ी चुकीली फास ॥

दद दे रह सभी सितारे, चाद खड़ा है मोन ।
 सूरज के समानांतर पर भला चलेगा कौन ॥

भरा समुंदर सींच रहा है—सूफाना के बीज ।
 नदी उफनती बस 'जाती' सी, गई उसी पर रीझ ॥

जम हुए हैं इस माटी पर उसी गूँठ के पर ।
 सो पहरा मैं भी जो दुनिया की कर आया सर ॥

सत्य बबाड़ी के खाद्य मैं बेच रहा ईमान ।
 उसकी हत्या का पहले से, सजा हुआ सामान ॥

फनक प चाद चमकता ह एक सब के लिए ।
वां जाफताब दमकता है एक् सब के लिए ।
घटायें दती है पैगाम सबकी खिदमत का ॥

हमार मुत्क म गाधी हुए ह गौतम भी ।
हजारो पीर हुए है बड़ पयम्बर भी ।
सभी ने प्यार से देखा है खेल कुदरत का ॥

न कोई मंदिरों मस्जिद म फक् फर्माए ।
न कोई गिरजा घरों गुम्बारे स अलग जाय ।
सभी के पीन का पानी हो एक पनघट का ।
इसे सबक न सिखाओ किसी से नफरत का ॥

^

गजल

अजभूषण चतुर्वेदी 'अजेश'

नसानियत है धम अपना और हम इसान है ।
बाद मे हिंदू इसाई सिक्ख, मुसलमान है ।

ह इबादत के अनका ढग, दुनिया म मगर—
'प्यार ही है खास जिसमे बस रहे भगवान है ।

सूट हत्या और डकती, खेल ह इनके लिए—
न उनका कुछ घम है जोर न कोई ईमान है ।

बेगुनाहा के लहू स हाथ है जिनके रग—
धम के दुश्मन हैं वे नसा नही शतान हैं ।

विशेष है कि यह एक ही प्रकार की बात है—
युवा व युविका के पास दुःख व अज्ञान है।

हिमा और अमर ग वरुण मरुत मरुत मरुत—
विशेष वरुण मरुत मरुत, मरुत मरुत मरुत है।

वर्णन और मृग

मरुत मरुत मरुत मरुत

नूतन पर्यावरण व दीर स गुजर कर भी,
 जा अपन मानवीय गुणा का
 अपरिचित रूप मा
 तथा पर्यावरण की बढार वास्तविकताओं पर
 अपनी मही प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करके उसका
 गुण एवं मर्यादा रूप
 प्रदान करने की शमना रचना है
 क्योंकि अति पर्यावरण व
 हर आयोजन में,
 बाद ता बाद स्वर ता
 पूरा ही है
 और मर्यादा व
 इन अभिव्यक्तियों द्वारा ही
 किसी भी गुण का
 गुण एवं मर्यादा,
 बनाया जा सकता है ।

^

तटु मर्यादा

अमरीक मर्यादा

हवा में हवा व, १
 १०० और अमरीक व मर्यादा व
 १००० - १०००० अमरीक व
 १०००० - १०००००
 १००००० - १००००००
 १०००००० - १०००००००
 १००००००० - १००००००००

अगाध की अगाध ही रहन दन व विर
 गाय वी/अगाध व विर
 प्रमाण प्रमाण बनन पर है ।
 अब गाय विर गाय
 अगाध की हान है
 प्रमाण प्रमाण बनन मे/अगाध रहना है ।
 रमा विर विर —
 वा अगाध, गाय विर विर गाय
 गाय व गाय प्रमाण है ।
 गाय गाय विर—
 गाय गाय अगाध ' गाय गाय है ।

^

एक प्रतीक्षा

रमेश चन्द्र उपाध्याय

आख म आशा जगाए, अनमने-से
द्वार मेर हं खुसे
ओ प्रगति विरणें कभी तो
आत्मवित्त करो, मर आगन द्वार भी ।

जनतन्त्र को छाती लगा
फिर सो गई जन-चेतना,
तृण-तमा से घिरा झपड
जागती बस वेदना ।

और इस झोपड के कोन म पड़े
इक बुये से दीप हम
आ रोशनी की शृंखलाआ,
कभी तो बनो, मरी बादनवार भी ।

काफिले बारा के गुजरे
राजपथ बन गया फुटपाथ भी
बिखरी झोपडी—बिखरी बल्लिया
दिखाती बबसी के हाथ भी ।
आख मे सपने समेटे
इक गठरी लेकर हम खड़े,
ओ गुजरते लद बाहन
कभी तो रुकी, मेरे सुने द्वार भी ।

चाह मे मधुमास की
हम पतझर म पड़े हैं आज भी ।
जनतन्त्र के प्रतीक बनकर
भर रह हैं ब्याज भी ।

अट्टालिकाओ की सभा म
गूंगे से हम मुख्य थोता,



उग आये मर भीतर
 ढेर सारे बग़्दस ।
 सवेदनायें सा गयी हैं
 बग़्दसी लबादा आकर ।

मर चारा ओर बा
 शोर नहीं जगा पाता है मुझे ।
 मरे ही भीतर उपजे
 एक महाशूय-से खिचे
 सनाट स मैं ऊज
 गया हू ।

बबन, मौसम और बदलाव
 स बेखबर मैं—बभी-बभी
 महसूसता हू स्वयं का ही
 एक शिला लेग्न भग्न सा
 जिसे कोई नहीं पढ़ पाता
 मैं स्वयं भी नहीं ।

^

दर्पण और अक्स

बहुत पत्थर फेंक लिए
 उसने मुझ पर
 और थक जाने के बाद
 मुँह पर बैठ गया बेबस ।

मैंने बराहते हुए पूछा—
 बस या कुछ जोर भी ?
 वो बोला—

दास्ती म सब चलता है
 ओर फिर मैं ता
 तुम्हारा शुभचिन्तक हूँ ।

/ ^

ग्रीक शिक्षा

मोहन लाल जोशी,

क्या तुम नहीं जानते ?

कि—तुम कुछ बन जाओ,
 कि तुम कुछ समझ जाओ ।
 कि तुम कुछ हो जाओ,
 कि कुछ सीख जाओ ॥

क्या तुम नहीं चाहते ?

कि कुछ पढ़ जाओ
 कि कुछ लिख जाओ ।
 कि कुछ सीख जाओ
 कि कुछ बन जाओ ॥

यह कोई मुश्किल काम नहीं
 यह कोई मुश्किल जाल नहीं
 यह कोई मुश्किल सौदा नहीं ।

चार अक्षर आराम से सीख सकें ।
 चार अक्षर आराम से पढ़ सकें ।
 चार अक्षर आराम से समझ सकें ।
 यह कोई मुश्किल नहीं ।
 इस मरहम को नहीं जानते
 यही मुश्किल है ।

कुछ अग़र मीयोग
 अपना आँख खुद कर लाग
 अपना हिमाय खुद कर लाग,
 अपना हिमाव खुद लिए लागे,
 अपनी क्या खुद पढ़ लाग,
 अपनी सवादी स उच जाओगे ।
 क्या ! तुम नही चाहते ?

महानो बिस्सा, लिखना-पढ़ना,
 साफ-सफाई, अपनी बात, आप समझना ॥

अपना बजन, अपनी सम्बाई,
 घर आगन की लम्ब चौडाई
 किलो क्विंटल, दाद दवाई,
 छोटी मोटी, धाज-बोमारी,
 बस रेली की समय सारणी,
 रेडियो-नाटक लोग सुमाई,
 भाया भाभी की चतुराई,

माना तो सीख सदा ही,
 कुछ न कुछ ता पढ़ लो भाई,
 करलो विचार करलो वादा
 पट-पट पट्टी पकड़ा बार,
 जल्दी हो जाओ तयार ॥

^

जीवन पूछे प्रश्न

जितेन्द्र

जीवन पूछे प्रश्न
 स्मति देती उत्तर

धेतना चुप रह जाती है ।
 स्मृति का उत्तर यात्रिक है
 जीवन राज बदल जाता है
 कल के उत्तर आज नहीं देते हैं काम
 और हमारे पास सिर्फ कल के उत्तर हैं ।
 सीखे हुए उत्तरों का एकत्रित कर
 लगी हुई है यहाँ दुकान
 जिन पर बिक्ता है उत्तर शास्त्रों के
 जीण शीण सिद्धांतों के
 सड़ी गली परम्पराओं के
 हजारों वर्षों की जड़ता के उत्तर लेकर
 जीवन के सम्मुख हम हैं जात खड़े
 और उधर जीवन है कि रोज बदल जाता है
 हम देते हैं दोष उस
 जब कि स्वयं की जड़ता ही असली दोषी है ।
 जहाँ नहीं जीवन है—वही है चाबल्य भी
 वही गति है वही क्रांति है
 वहाँ प्रति क्षण सभी नया है ।
 अतः छोड़ना होगा विगत मायताओं को
 और भूलने होंगे सब उत्तर उधार के,
 हम समस्त बनना होंगे अब हतना
 कि जीवन पूछे प्रश्न
 ना हम स्मृति का चुप कर दें
 और चेतना खोजे उन प्रश्नों के उत्तर ।

^

मत करो

भूपेन्द्र "तनिक"

मरे खुरदरेपन पर
 अब कैक्टस ही उग सकता है

गुलाब की बलम लगान का प्रयास
 मत करा मत करा मन करा
 बिभी अगस्त्य ने भरे सहनहात
 सागर की साख लिया है
 तमाम की तमाम मछलियां मचल कर

मर चुकी हैं
 और
 भूल चुके हैं बछुए
 ढाल से बाहर
 चेहरा निबालन का अभ्यास
 सूरज स रोजनी उधार लेकर
 चमकने का काम चालू ने बंद कर दिया है,

अहमवण
 इसीलिये मुझोंवर मिट चुके हैं
 कुमुदिनी के सय के सय पुष्प
 मेरे मूखे सागर मे, कही से कीचड़ लाकर
 कमल उगाने का काम मत करो मत करो मत करो

^

मेरी अपनी आवाज

जितेन्द्र

यदि तुम नई घरतियां तोड़ना चाहत हो
 नये आकाश खोजना चाहत हो
 नय पाताल फोटना चाहत हो
 यदि तुम्हें नये सूर्य से आख मिलानी है

ता प्रबचक अवमण्यताओं का
 परम्परागत बजनाओं को

तिलांजलि देनी हागी

तुम्ह प्रज्ञा का, विवेक का वरदान मिला है

दूसरे बोलें और तुम उसे दोहराओ

क्या यह अपमान जनक नहीं है ?

कहा गई तुम्हारी मघा

कहा खो गई तुम्हारी गरिमा ?

क्या तुम बिलबुल प्रतिभा शून्य हो

श्री हीन हो ?

क्या तुम्हारे भीतर स कोई अनुभूति नहीं आता

जिसे तुम कह सबो कि यह मरी है

इसे मैं निमी म सुनकर नहीं दाहरा रहा हू

यह किमी और की आवाज नहीं है

यह मरी अपनी आवाज है

क्योंकि यह मेरे भीतर से आ रही हू

मेरे प्राणा से यह फूल निकला हू ।

^

अहम् का दण्ड

रामनिवास सोनी

सदिया से मुझे बांध रखा है

उत्तने,

अपने फौलादी शिकजे में ।

मैं उन्मुक्त यायावर की तरह

चाहता हू जीना ।

महज अशिव्यक्ति

निग्रह मन

मेरे सामक अस्तित्व के उपादान हैं ।

मैं टूटा
 अपन होन के बीने अहसाम से—
 बिखरा
 काच की तरह—
 पारदर्शी महल की चौखट स गिरा,
 उठा कई बार
 फिर फिर गिरा ।
 अपनेपन की तज सुरा पीकर
 बहका बहका फिरा युगा से ।
 सहस्रो विपैले बिच्छुआ के दश से घायल
 मरा अवचेतन मन
 छटपटाहट क कगार स पुन लौट आया ।
 चाहता हूँ एक निस्पद, निर्व्याज जीवन
 उमुक्त मानस गगन ।
 और
 उन जजीरा को तोड़ दना चाहता हूँ
 जिनमें बघा है
 मेरा जाग्रोश भरा दद ।
 मेरी समग्र कामनाएँ तिरोहित हो जाएं
 जिनका मैं क्रीतदास रहा—आकठ ।
 मेरी बचती चेतना को मिले
 सही पथ—सही अय ।
 कृत्रिमता का मुखौटा उतार फेंक
 आ पगलाएँ मन ।
 अभी तो खतरा है, जागरण की बला है ।

^

सरसो

रमेश कुमार वर्मा

फातुन की सरसा
 पीली-पीली चितवन,

भवरे की गुञ्जन
गहू की वालिया

सरसा की वालिया
झूम रही खेता म,
लाल-पीली साडिया
पहने कुवारिया

हाथो म बगन
गीत गाती मगल
सरसो ही सरसा
पीली पीली सरसा

दिल का सहलाती
मन का सहलाती
झूम रही सरसा
फाल्गुन की सरसो ।

^

मीन चेतना

श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष

कौन सुने ?
किससे कहू ?
और

सुन तो समझ कौन ?
बाबा गांधी कह गये
सबसे बड़ा है मीन ।

बदना के इन क्षणों में
जी रहा हूँ—मैं ।

चारा ओर
घुटा घुटा-मा,
उमसाया सा,
हिर भी
अपनी बाँझिल
जिंदगी के भार को
ढाए जा रहा हूँ—मैं ।

फिर एक आवाज
वही दूर—क्षितिज पर
सुनाई पड़ती है
जो, मन वीणा के तारों को,
छेड़ कर जगाती है—तब ।

चुप मत बठ
हाथ पर हाथ मत रख
निधूँभ भुस की नाइ
मत सुलग अतस में ।
फूट पड़,
प्रज्वलित ज्वालामुखी बन

और
हिलादे सारी धरती का
आलम अपने आप
बदल जायेगा
सोया भाम्य, अपने आप
जाग जायेगा ।

प्रतीक्षा

दीपचन्द सुथार

चिलचिलाती धूप में
अपने शिशु का
झाड़िया की छाया में
झूले में मुलावर

भूखी प्यासी व्यस्त हो गई
पत्थर ताड़-तोड़
कबरी बनान में ।
रोत दण—

त्वरित
स्नेह बश छाती से लगा
जीण शीण साटी से ढका
स्तनपान करा देती ।
कसी विडम्बना है, कि—

धीवनावस्था में ही
विघाता ने
उसके सिर का सिन्दूर छीन लिया
अतस का वसन्त
अचानक—

पतझड़ में परिवर्तित कर दिया ।
अपने महे जाने वाले
मिफ नमक छिड़क रहे हैं

फिर भी अपन का बचाती
पग पग की परशानिया सहन करती
बठी हैं
उस डगर पर कि—

आशावा का चाद उदय हाकर
 वल के गुनहल स्वप्ना का—
 मुखरित करंगा ।

^

समस्त्व भाव ?

घासु आचार्य

बहुत तुरेदने से भी
 नहीं मिल पाता
 वह बिंदु

सवेदना के अनुभव जगत म
 जहा हम
 खम ठोक कर कुछ सवे
 या कि हसते हसते
 हर क्षण सह सक

पूरी की पूरी जमीन
 या कि आकाश
 मिमट आता है
 किसी होले होने
 चलती लहर की तरह

और वही क्षण—
 क्यों फिर फूट पडना चाहता है
 किसी ज्वालामुखी की तरह
 आग ही आग

लावा ही लावा
बीचड ही बीचड

आखिर सच क्या है ?
ठंडी होले-हो न च नती लहर
तज आम उगलता लावा

मैं दाना ही दशा म
भाम रहा होता हूँ
हाफता पसीमा पसीमा हुआ
चाहता हूँ
पैदा करना
गीता' का समत्व भाव

चाहता हूँ
धूल मे कणा की तरह
हवा म तैरना
सब तरफ से निरपक्ष

बि-तु—ऐसा कुछ नहीं हो पाता

मैं अपने से ही
फिसल रहा हाता हूँ
म अपने से ही

^

आत्म बोध

कलाश चतुर्वेदी

हम जीवित हैं ?
यह भ्रम

तुम्हारा हमारा नहीं
 अवसर
 सभी पाले हुए है
 तुमने परोदी है कभी
 बोई चीज
 या कभी बची भी होगी
 अमूल्य जीवन धरोहर
 यही खुद ही ता
 नहीं बिक गया हो
 जड़े विश्वास की
 गहराभी मी लगती हैं
 खुद ही क्या
 हम सभी तो बिक हैं
 मुझे 'बिकना' शब्द भी
 रास नहीं आता
 सभी बिकन पर
 मरने' का मुलम्मा
 खड़ाकर देखता हू
 तो सौ टका सही लगता है
 क्योंकि
 हम अपनी बुद्धि
 अपनी प्रतिभा
 अपनी शक्ति और कला
 अपना विज्ञान
 और अपना सम्पूर्ण अस्तित्व ही
 बेच दत है
 या सौंपकर मर जात है
 फिर क्यों सदाघ भर
 खोखले अस्थिपज्जर के भूत का
 ढोते आ रहे है
 विक्रम-बेताल सा

द्यूह कसने दो

जिते द्र शकर बजाड,

द्यूह कसने दो,
अभी तोडो नही ।

शब्द कुछ,
अब भी हवा में उड़ रहे हैं
वे कहीं पर तो
तुम्हीं से जुड़ रहे हैं ।
तुम न कुछ सोचो, नया जोड़ो नही

है अभी भी खूब पीलापन,
दिशाओं में ।
चीखते उल्लू हैं चुप,
साईं निशाओं में ।
समय को पढ़ लो, यू ही छोडो नही

है खुले पृष्ठ अब तक,
मधुर यादों ने ।
बन न जाए स्रग्ध कल की,
फिर विपादों के ।
साथ कुछ चल लो, अभी दौडो नही

कौन बैठा है तिमिर बन,
भोर के आग ।
चाह है कि सूर्य जीत,
और निशा भागे ।
पूब में जाओ, कदम मोडो नही

पेवन्द

सीता राम व्यास 'राहगीर'

आदमी

एक आदमी ह

वह वस्त्रो क भीतर मला है

यदा कदा ।

भीतर का भण्डार खुलत ही

वर्षों से दबी गध

आग के घुए की तरह उठती है

घुआ उसका भीतरी अधेर

कभी कभी आदमी

अधेरे में अपने वस्त्रा पर

पबन्द लगाता

पेवन्द पेवन्द है

वह टूटने का जोड़ता है

इन सभी होने वाली परिक्रमा में

कभी इंसान जीतता ह तो

कभी हारता भी है

मौका पा कर कभी

हाने वाले युद्ध से भागता है

रणछोड़ बनकर/फिर जीता है

यही आदमीयता है ।

^

प्रेम

वीरेन्द्र कपूर

प्रेम का अध

हृदय वस्तु ने उद्दीपन से है,
यह द्विआयामी, द्विअर्थी है
आंतरिक और बाह्य,
बाह्य रूप में
दिलो को जोड़ने की
मात्र एक बड़ी है।

दो विपरीता को

समीप लाकर
एक सूत्र में पिरोने की
सुंदर लड़ी है।

प्रेम,

शासको की शक्ति,
सदैव ही रहो है
एक सम्राट ने अपनी आत्मजा को,
नेकर
दूसरे की शक्ति का वधन किया,
इतिहास साक्षी है।

तभी बड़ी है साम्राज्य वधन की परम्परा
जा भूत म थी, अब भी वही है,
मात्र समीकरण म परिवर्तन हुआ है।

प्रेम,

सत्ता परिवर्तन के अमोघ मंत्र,
नित्य और शाश्वत रहे हैं।
भाज भी पद बंटते हैं,

अपन स रगा में बहन बाले घूना म,
रक्त जा एहसास है पयाय है
राजवशा ममुटाया परिवारो का ।

प्रेम का आन्तरिक स्वरूप
मन्यन का ही प्रतीक है ।
प्रेम इस अर्थ में,
विचारा और भावनाओं का मेस है
विचार के स्वरूप में
सघष को झेला है ।

समानार्थी विचारो में,
एकता को जन्म देकर,
विश्व चेतना से युक्त होकर,
“वसुधैव कुटुम्बकम्” के सूत्र का,
जन्म दिया है ।

तभी तो
विश्व की पाशविकता का त्रमिक ह्रास,
और
सभ्यता का त्रमिक विकास हुआ है ।
विचारो की विपरीतता में
त्राणित को जन्म दिया है ।

भावनाओं का स्वयं का इतिहास है
भावनाएँ,
जब तक व्यक्तिपरक हैं
सब कुछ ठीक ठाक है,
भावनाएँ हठात बलवती होकर
निरक्षुण्ण हाती हैं ।

तभी,
मनस्क्य की विभिन्नता में,

दिचारा का टकराना,
 व्यष्टि स समष्टि की ओर
 अग्रसर होकर,
 सवत्र व्याप्त की आवाज़
 बलवान होकर,
 खुद को धोपन की प्रवृत्ति में
 जन्म होता है,
 युद्ध का ।

जो विनाश का प्रतीक है ।
 आज तक जितने युद्ध लड़े गए,
 सभी का उपादान,
 महत्वाकांक्षा रणभेद, घृणा
 विस्तारवादी श्रुतियुक्त नीतियाँ का,
 एक मात्र परिणाम है ।

घृणा से घृणा उपजती है
 जो विनाश का प्रतीक है
 फिर इस विनाश लीला में
 प्रेम की लहर वही से
 प्रस्फुटित होकर,
 सबेरा देती है,
 सृजन का ।

जो, जीवन के क्रमिक विकास का माग है,
 इसलिए, घृणा त्याज्य है
 और प्रेम स्वीकार है,
 इसी का सदैव आह्वान है ।

अधेरे से लडाई

सरला गुप्ता 'भूमे द्र'

हम सब कैंसी जधी सुरग मे फग पडे हैं
घुप्प जधेर म नथूने फुलात
दमघोटू अधेरा और हमने
खुद ही म्याह तल म अतहीन
स्याह सुरग के कपाटा के ताला की
चाबी सुपुद कर दी ह
रोशनी के आश्वासना के हाथा म

ला हूडो अब पच पच मरो
लाय काशिश करा वह हाथ नही आयगी
यो देखो धुधली मी आकृति म
निकल गया ह बहुत दूर
बहुत शुभेच्छु या यो पलभर पूव
या देखो घुस रहा ह अपने प्रभामडल म
और निराकार है यो
उसका प्रभामडल हमे हाथ नही आयगा
जधकार यो ही गहरायगा

बबो मत

अदद नथूने फुलाने से अधेरा नही छटता
बिलबिलान से सवेरा नही रचता
रात यो इतना स्याह बुना गया ह

भागो नही

हवडदबड म आपस म टकराओगे
कुछ मरोगे कुछ घायल हा जाओगे
लिहाजा दुबक जाओगे
सहम जाओ और भाप ला

अधवार व ठेकेदार की तावत
खचार के साथ एवं साथ ह्वार दा

लेकिन तुम ऐसा नहीं कराग
खचार वर खिसिया जाआग
सबको दुबवता सुबवता पाओग
ऐसे मे अतहीन सुरग का
वरण वर चुवत हो
आदतन अधेरा पीत हा
अधेरा उगलत हा

कैसी फिरत है अधेरा जी भर वर जीते हो
ऐस जीने पर सोच विचार नहीं है क्या
अधेर की घेडी माटन का
मेप कोई हथिरार नहीं है क्या ?

^

स्नेह और बदलता परिवेश

अजना भटनागर

विसंगति के क्षण में
जब
कोई चुपचाप कंधा थपथपाद,
जब किसी की आख
आत्मिक महाराई लिये कुछ ऐसा प्रगट करे

कि—

किसी के मन में सैकड़ों गुलाब खिल उठें,

जग किमी र हाथ का स्पण
यह अहसास करा

वि—

वह उसने साथ है
हर अवस्था में ।
वह है स्नेह
ऐसा—

वि—

जिसका कोई भूतय नहीं
जिसकी कोई भाषा नहीं
जिसे अनुभव किया जा सकता है क्या नहीं

पर—

अब ऐसे सवेदनशील हाथ नहीं
जिसका स्पण, थपथपाहट सा त्वना द सबे
ना ही है ऐसी जाये—

जिनकी तरलता में डूबा जा सक
टूटे हुए परिवेश में
मग्न महत्वाकांक्षा को
कही काइ नींद तो चाहिए ही

एक बैसाखी

उधार भागी स्नेह क्रोड का
जिसे पाकर
यक्ति हा उठता है उत्फुल्ल

और—

आखो में उम आत हैं
रगीन बासती गुलाब
लेकिन—

सभी तो मागी हुई हैं—

मनह फ़ोड़, उत्फुल्लता, बासती बलना ।

तभी तो—

बसत

अजान ही

अपनी कंचुली याद छोड़कर

चला जाता है मूलधन लेकर महत्वाकांक्षा के मोतिया का

और व्यक्ति

व्यतिक्रम के दृष्टि से टूटकर

बिखर जाता है

और—

शब्द काप म दूढ़ता है तीसर मंत्र से

मनह व शब्द का अर्थ !

किन्तु—

मन कहता है

मनह

मौन, अव्यक्त अभिव्यक्ति है

अनंत गहराई में बुनियाद लिए

काई मुझे इसका अहसास करा दें ।

^

नफरत के बीज मत बोओ

ईश्वर ताल गारू 'दशक'

नफरत व बीज मत बोओ

इतना हिंसा की फसलें जगेगी—

और रक्तपात व पलिहान लगेंगे ।
 अगणिन आधा स वहग—
 आसुजा व धार ।
 मानव के मसूत्र ढह जायग सार ।
 फिर थम व हाथा म हमिया नही—
 पजर हाग—वहारे नही वजर हाग ।
 नफरत के पीज मत बीजी ।

नफरत की नजरो म मन दग्ग
 वरना हम सब जघेरा म खा जाएग ।
 प्यार व सार चिराग गुल हा जाएग
 आवन मिसबग,
 गलिया चीखेगी ।
 तब गीतम, ईसा, माहम्मद—
 और नानक की वाणी सुनाई नही पडगी
 सब व सिर शैतानियत घडेगी ।
 नफरत की नजरा स मत देखा ।

धर्मों व घरे मत बनाओ—
 और मत करा इनकी परिभाषाए ।
 इसम दिलो म दरार पडनी है ।
 बहता है खून इ सान का और
 लाश सडती है ।
 गर मजहब क रास्ते पर—
 बाह्य बिछाओग तो,
 सतो के चरण चिह्न मिट जायेंग ।
 निश्चय ही हम भटक जायेंगे ।
 धर्मों व घरे मत बनाओ ।

मानव हो ता मानव के गल मिलो—
 और प्यार से चूमा एक दूसरे व हाथ ।
 स्वग उतारा घस्ती पर रहने को एक साथ ।
 तो आओ—

मानवता का मर-द बाटो,
 समता का छ-द बाटो ।
 लडा ता भूख और अभावा स लडा
 सबसे मिला—पुष्प स पिला ।
 मानव हा तो मानव न मले मिलो ।

^

अग्निधम

प्रकाश तातेड

इतना निम्नज है
 आज का सूरज
 कि दिन की राशनी स
 घाल गया कोई
 रात की खामोशी ।

मुर्दा हा गय मरे गाव स
 खून स लयपथ है
 पीपल की छाव
 पनपट पर कट पड़े
 महदी रचे पाव ।

हवा मे भरी
 बारूद की तेज गध सासी है
 कि अभी अभी यहा से
 गुजरी है जाग उगलनी बटूक ।

माना कि आग उगलना
 तुम्हारा धम है, बटूका ।

मगर गलत हाथा मे
 वैसे वच पायगा
 तुम्हारा अग्निधम ।

^

शब्द साधना

सुशीला मूया

कलम के कमाल स जब तक
 अपरिचित थे,

शब्दों की पनी धार स
 जब तक अपरिचित थे

शिखा के सार स जब तक
 अपरिचित थे

गतिमय ससार स तब तक
 अपरिचित थे ।

पाटी और पोथी स जब तक
 अपरिचित थे ।

अक्षर व मोती स जब तक
 अपरिचित थे ।

ज्ञान की ज्याति से जब तक
 अपरिचित थे ।

धवन की चुनौती से तब तक
 अपरिचित थे ।

शब्द की सामर्थ्य को
जब हमन जाना,
सरस्वती की साधना की
महत्ता को पहचाना

तब समझ है कि इन माटी पोषिया भ
भरी है अपार दौलत,
कोई नही लूट सबता विचारा,
चित्तन भगन का यह अद्भुत खजाना ।

पाटी, पाथी और कलम से
परिचय के बाद
हमन सबल्य लिया है कि
हमे साक्षरता से शिक्षा,

शिक्षा स सस्कृति
कला र ध्यात्म, विज्ञान
और उन्नत तकनीकी
तक के सम्बन्ध

किन्तु सुशृङ्खलाबद्ध
विकास पथ पर है बढ़त जाना ।

^

जब सिर से पानी गुजर जायेगा

रूपसिंह राठौड़

य—नित्य नये उभरत
तनावो का बट्ट सिलसिला

दर्शाता है—

किसी अनहानी व आगमन का

जो—भव्य अतीत का भुलाकर

पसर जायगा धरा पर

हाथ-पैर फँलाकर

क्षितिज के स पार स उस पार

तब—

पसरा हागा बहुत जोर

अधेरा ही-अधेरा

धीत स्पर्शिम का याद कर

बासू डलकायगा

हर-नव आग तुष सवेरा

और—

य वस्तिया—हो जायेगी वीरान

मानव हीन श्मशान व ममान

कि—जगस व ये जीव

रोद डालेंगे—हर गाव—शहर की मलिया के

और—

छीन लग—बच्चों की किलकारिया

और अधरो की मधुर मुस्कान का

तो—

अब भी वक्त है—

समय रहने चेतने का—विषमता भेटने का

आरोप प्रत्यारोप की झड़ी समेटने का

नहीं ता—छाड़कर नव-जीवन की आस

भावी पीढ्या—भाग्यी सत्रास
जब मानव का मनुष्यत्व पर आयगा
तब क्या होगा—जब सिर से पानी गुजर जायगा ।

^

अहसास

कुतुबुद्दीन नद्दाफ

तरल, सिद्धरी रक्त,
आसपास उग आए
पज्जा व पारा स,
शोलो सा टपकता हुआ ।

नाखून व निशान लिय
यक्ति की पीठ के,
अनगिनत नकाब,
उगलिया के चेहरा पर ।

एक कराह उठती है—
अहसास की काशिशो म, शायद
पज्जो पर का खून हा
कि हो अपना का,

नेकिन एक तीखा दद पसलियो क,
आसपास,
झुठला देता है सब कुछ ।
शकुनि व पाय हमसा चित ।

लविन साप की तरह
 अपनी कँचुली उतार,
 लोटा लता टूट,
 अपन जिस्म बा,
 तभी शायद इतनी लम्बी हैं
 इतनी लम्बी है
 मरी उम्र ।

^

भूख

सुकान्त 'सुमि'

भूख
 पैदा हाती है
 इंसान के जन्म के साथ
 समय के साथ साथ
 फलती फूलती रहती है

बचपन
 फिर जवानी
 जीवन की दांड में
 सबसे आगे
 सबसे तेज
 भागती है भूख

दिन रात
 रात और दिन
 मानव मशीन बन
 करता रहता है काशिश

मिटान के लिए
भूख !

काल देश और समय —
हर युग में
हर पल—हर घड़ी
जोक की तरह
बदन से
चूसती रहती है
खून

हडिडयो का गटठर
पुतले-सा बदन
सुंदर रूप
पौवन की दहलीज
मुखद सपने
प्यार मोहब्बत
मान-अपमान

आबरू
ममता
नाज, शम, हया
चूँच जाती है
भेंट
भूख की
चिपटी रहती है
आंतडियो के साथ

और
भूख को मिटाने के
सब प्रयत्नो के
बापजूद

एव दिन
निगल जाती है
इमान को
भूय ॥

^

तबदीली

मुलाम मुहम्मद "खुशौद"

शालाबार
है आसमा ।
शोलाखैज
है जमी ।

जल गई
मुहब्बत की फसल
सहताही रही है हर मू
बहशियाना दरिदगी की काश्त ।

दरिदा बनकर
घाट रहा है
आदमी का लहू आदमी ।
आफ ।
कितनी तबदीली आ गई है,
आदमी की आदत में ॥

नीति

भोगीलाल पाटीदार

आत्म विभोर हो
मन से विमोहित हो
करना चाहा कृत्य ऐसा
भविष्य में रहे याद जैसा ।

किया गमन उस राह आर
साक्षात्कार हुआ माग छोर
बौन जा रही साहसी अकेली
कोई मानव या है पहली ।

अनायास धोल निकल पड़े
हृदय में दया भाव उमड़ पड़े
तुम अकेली सुनसान राह
किसका लेना है तुम्हें चाह ।

मुह खुला, स्वर निकला
सुरीला, मदुता में गाभीय
तुम हो विद्वान् सत्यवादी
मेरा ज्वर है बड़ा मियाँ ।

तुम मरत्य से नहीं डिय भक्त हूँ
सद्माग नहीं छोड़ सकत हूँ
एक बीबी के भक्त हूँ
बिचारा के बड़े दड़ हूँ ।

इन सबसे रहती हूँ दूर
इनको समझती हूँ दूर
छल, असय का मरा परिवश
पसा, परिवर्तन, रहना खामाश ।

एक दिन
निगल जानी है
इमान को
भूख ॥

^

तबदीली

गुलाम मुहम्मद "खुर्शीद"

शोलाबार
है आसमा ।
शोलाखज
है जमी ।

जल गइ
मुहब्बत की फमन,
लह रहा रही है हर गू
बहशियाना दरिदमी की काशत ।

दरिदा मनकर
घाट रहा है
आदमी का लहू आदमी ।
आफ ।
कितनी तबदीली आ गई है,
आदमी की आदत में ॥

नीति

भोगीलाल पाटीदार

आत्म विभोर हो
मन से विमोहित हो
करना चाहा कृत्य ऐसा
अविष्य म रहे याद जसा ।

बिया गमन उम राह आर
साक्षात्कार हुआ माग छोर
मैन जा रही साहसी अकेली
कोई मानव या है पहेली ।

अनायास खोल निकल पड़े
हृदय म दया भाव उमड़ पड़े
तुम अकेली सुनसान राह
किसका लेना है तुम्हे याह ।

मुह खुला, स्वर निकला
सुरीला, महुता मे गाभीय
तुम हो विद्वान सत्यवादी
मेरा ज्वर है बड़ा मिथादी ।

तुम सत्य से नहीं डिग सकत हो
सदमाग नहीं छोड़ सकत हो
एक बीवी के भक्त हो
बिचारा के बड़े दढ हो ।

इन सबसे रहती हू दूर
इनको समझती हू नूर
छल, असय का मरा परिवेश
पैसा, परिवर्तन, रहना खाभोश ।

बही दामन पैलाती हू
 बभी हाथ जाडती हू
 साष्टाय प्रणाम भी बरनी हू
 वादा म खुभाती हू ।

बाम निबलन पर भूल जाती हू
 राज या गीनि से जानी जाती हू
 मुनवर चकरा जाता हू
 सहसा स्मृति मे लौट आता हू

^

मोतुकी और उत्फोचो सस्कृति

मेवारास कटारा 'पक्'

देशी और विदेशी
 बँबटस जो बोय थे आगन मे
 अब मेरे ही अग छेन्ने गे है
 अनावत करने लगे है

कुल वध के वसन
 बेचारी पराधिता वस्त्रो
 विवश हुई/समर्पित है
 इस मोतुकी सस्कृति के चरणो म

विच्छिन्न वसना निरशना
 वैमाश्रियो पर चलती गा
 आखो म साझ का मूरज चमक उठता है
 यह क्या ?

मर परा का सबका मार गया
 तुम क्या हसत हो ?
 अस्तु, तुम्हारा दोष नहीं
 पीड़ितों का उपहास
 ममदोष का परिहास बन जाता है ।

अब कौन बचाव दीपदी की लाज
 कृष्ण भी समर्पित है
 उत्सोची ससृष्टि के लिए
 नहीं ।

मैं बसाग्रियो से चलकर ही रक्षा करूँगा
 अरे, मेरे तो हाथा को भी
 नाव पिचती चली जा रही है
 बड़ रहा है बेचल पेट

बाणी लडखडा रही है
 सत्य के अभाव में
 लगता है मुझे भी समर्पित होना पड़ेगा
 मौतुकी और उत्साची ससृष्टि के नाम ।

^

सुहाग सिद्धर

जगदीश प्रसाद मिश्रा

प्रिय ।

मर माथ का सिद्धर
 तुम्हारे कर के हस्ताक्षर है ।

सरल चिरन उन्मादित

निगम है—विश्वाम निहित ।

नि मुद्रावा है अधिवार

तुम्हार पीर्य पर

जिसको दवर शक्ति भक्ति नित

अपने मन की सुन्दर तन की

में सृजन करगी नय भव का ।

यह ज्योति रंग

तन की छाती पर—तुमने गीची है,

अपने वर म घुटकी भरके,

है डीठ भरी आया का एक ठिठाना ।

अवका—मजा दिया है तुमने

भाल लालकर—अपने उर क रंग स

यह सिन्दूर मलाना

जिसका लवर

तन की रति म मन की गति स

में निमाण करूमी

नव सस्रुति का ।

रक्त रेख-सा

यह कुनुम का दीप्त तिलक

अभिषेक किया है तुमने मरा

कि मैं स्वामिन हू आज तुम्हारे—

मन सिंहासन की

जिसको लेकर रचा जायगा

इक इतिहास नय युग का ।

तुम्हारा दान महत वरदान मिला है मुझको—

जिसके बल स नष्ट करूमी मैं दुर्भावन का

जग स अध का ।

दीप

रामनाथ भगल

दीप ।

तुझे क्या मिलता है
तिल तिल कर जलन में ?

अंतिम बूद भी
न बचाकर
जला देता है ।

जब चाह तब
मसल कर बुझा दते है तुझे ।
लेकिन

तू हमेशा
जलता हुआ मुस्कराता रहा
आखिर तुझे मिलता रहा

‘ भटके लोगो का राह बताने में
जीवन सफल हो जाता है मेरा ।

जीवन ध्येय बन गया है मेरा
परापकार में जलकर भी मुस्कराते रहना ।”

लेकिन
अधेरा तो मौजूद है
तरे तले के नीचे

इसे तो दूर कर लिया हाता
परोपकार करने से पहले ।
“ये तो एव प्रतीक है

उस जवकार के लिये
जो मेरे बुझान वाला वो
समेट लेगा मेरे बुझ जान के बाद । '

^

समय-सत्य

श्याम 'निर्मोही'

एक दीप यदि जले सत्य का
तो यह दश चमन हा जाये ।

कैसे हम आजाद मुल्क भ,
जाने का जरमान सत्रोये ?

कस हम गांधी योत्तम के
सपना को विश्वास दिलाये ?

हाहाकार विपमताओं स
भारत माता बिलख रही है ।

आज दश की तरुणाई भी
मय खाना म सिसक रही है

अवमूल्यन अब है चरित्र का,
कैसे नतिक जित्ना साये ?

चमन उजड़ता देख-छे कर,
आधा म आग्न आ जाये,

एक दीप यदि जले सत्य का,
तो यह दश चमन हो जाये ।

आओ तीर्थ-तीर्थ पर बठे
हसा का आवाज लगाय ।

गंगा की सौग-घ हमे है,
और बसम अपनी माटी की ।

मुझे, बताओ शत्रु दश का,
किस आश्रम में छिपा हुआ है ?

मुझे बताओ, कहा छिप है,
दश भविष्य का सज्जवल चहरे ?

शापण की दीवार खड़ी है,
चारा ओर जहा तक जाये

मुक्ति सुझाओ कहा-कहा तक,
भारत का अस्तित्व बचाये ?

एक दीप यदि जले सत्य का
तो यह दश चमन हो जाय,

^

स्वाव

विद्या पालीवाल

स्वाव

बादल से बगने

पहाड़ी पर ढसत
उछलत
भचलते ही चल दिये ।

आई ऐसी लहर
उठा कसा भवर ?

सजल सजल
नयन चंचल
घार अबिरल

बह रही प्रतिपल
सींचत पल पल घरा बा
थिरक थिरकत चल दिय ॥
स्वाव बादल से

बनना मिटना
मिट कर बनना
सुन्दर सपना
शाश्वत अपना

क्रम क्रम करत ।
अबिरल बहत ॥
छप छप करती
हर सिहरन मे

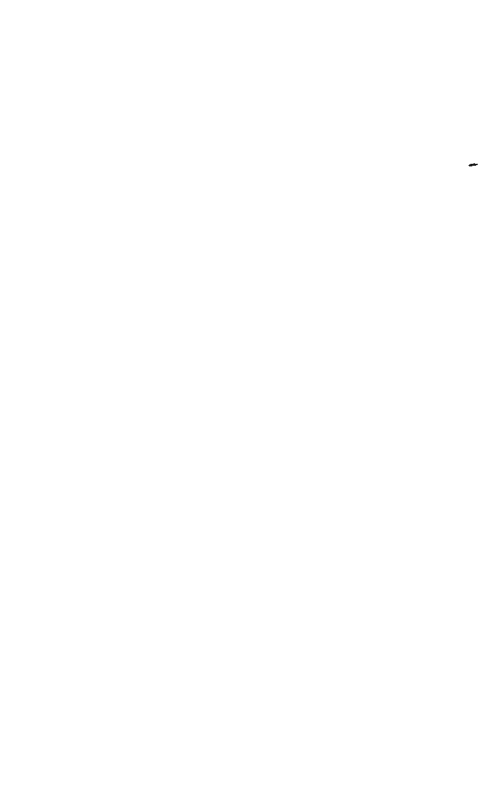
य भाव भरत चल दिय ॥
स्वाव बादल स

स्वाव आत रहे
स्वाव जात रहे
स्वावा म हो जीवन बितात रह

ने मन भी तपन
जग भी उलझन
क्षण-माण जग क्रम म घाल घाल
मधु वण लुटात चल दिय ॥

स्वाय
बाज से बनत
पहाडा पर डलत
उछलत
मचलत ही चल दिय ॥

^



सम्पर्क सूत्र

- सावित्री परमार, पालीवाल भवन, खजान बासो का रास्ता, चादपोल, जयपुर
- भगवती लाल व्यास, 35, फतहपुरा, खारोल कॉलोनी, उदयपुर
- चन्द्रमोहन हाडा 'हिमकर', म० न० 80 17 गुलराज क्वाटर्स 3, नसीराबाद रोड, पारसी मंदिर के पीछे, अजमेर (राज०)
- रामस्वरूप परंश, पीरामल उच्च माध्यमिक विद्यालय, बगड-333023, मुमुनू
- त्रिलोक गायल, अग्रसेन नगर, अजमेर (राज०)
- गोपाल प्रसाद मुदगल वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारी, जिला परिषद धौलपुर
- पुष्पलता कश्यप, प्र० अ०, रा० प्रा० बा० विद्या० उदयमंदिर (आसन) जोधपुर
- नवनीत कुमार व्यास, व्याख्याता, राज० उच्च० माध्य० विद्या० साबला (झगरपुर)
- सगीर "शाद", अध्या० रा० प्रा० विद्या० धडछबडा (कोटा)
- कैलाश चंद्र शर्मा, व्या० रा० उ० मा० विद्या० बीमोद (भीलवाडा)
- विष्णु लाल जोशी, प्र० अ० प्रा० विद्या० बल्लभनगर (उदयपुर)
- ज्ञान प्रकाश पीयूष, व्या० रा० उ० विद्या०, रायसिंह नगर (श्रीगमानगर)
- कमर मेवाडी, चाद पोल, काकरोली (राज०)
- रामगोपाल "राही", प्रधा०, रा० उ० प्रा० विद्या० पापडी (झू दी)
- वासुदेव चतुर्वेदी, एस० आइ० ई० आर० टी०, उदयपुर
- अरविंद घुस्वी, व्या० रा० उ० मा० विद्या०, रतननगर (चूरु)
- ओम पुरोहित "बागद", 24 दुर्गा कॉलोनी, हनुमानगढ़ सगम 335512
- ब्रजभूषण भट्ट, प्र० अ०, रा० मा० विद्या०, तारागढ़ (अजमेर)
- नंद किशोर चतुर्वेदी, प्र० अ०, रा० उ० प्रा० विद्या०, ठुकराई (चित्तौड़गढ़)

—शिव मृदुल, बी० 8, मीरानगर, चित्तौडगढ (राज०)

—श्रीमती सीमा पवार, रा० प्रा० बा० विद्या० नया बास, शिव मंदिर चूरु

—अरविन्द निवारी, रा० मा० विद्या०, बामनी (नागौर) 341021

—प्रीनमसिंह परमार, स० अ०, रा० प्रा० विद्या०, खीमेल बापा रानी

—श्रीमती चमेली मिश्र, प्रधानाध्यापिका, रा० बा० मा० विद्या० सादर

—रामनिवास सुवाहिया, राज० उ० मा० विद्या० निम्बाहेडा (चित्तौडगढ)

—भणि बाबरा, रा० नगर उ० मा० वि०, दासवाडा

—रफीक अहमद समानी, व० अ०, राज० उ० मा० विद्या०, कुचामनसिंह

—जगदीश सुदामा, श्री कृष्ण निक्कुज, भट्टियानी चोहट्टा, उदयपुर

—भगवती प्रसाद गौतम, 1 त० 8 "अजलि" दादावाडी, काटा (राज०)

—मिथी लाल एम० ओझा "विश्वास", प्र० अ० रा० उ० प्रा० विद्या० बाया रोहिडा जिला सिरोही

—श्याम सुंदर भारती, फतेह सागर, जोधपुर

—अब्दुल मलिक खान, रामनगर, भवानी मंडी-326502 (झालावाड)

—नटवर पारीक 'विद्यार्थी', सचालक श्री शारदा ज्ञानपीठ, डोडवाना (न)

—रामनिरजन शर्मा 'ठिमाऊ' साबु हायर सेकण्डरी स्कूल, पिलानी (झुझ)

—चैन राम शर्मा, प्रा० प० बदेमरा बाया खेमली (उदयपुर)

—टी० एस० राव राजस्थानी", पुस्तकालयाध्यक्ष राज० सांख्यिक त पुस्तकालय, प्रतापगढ़ 312605 (चित्तौडगढ)

—मध्या किरण मोहित, दयानन्द बाल मंदिर, रथखाना बीकानेर

—सावर दह्या, 3 च० 14 पवनपुरी, बीकानेर

—नेनाराम टाक, नयापुरा, तालाब की बारी, सोजटसिटी (पाली)

—सगीता या, बीकानेर चिल्डन स्कूल, राज० मुद्रणालय के सामने बाकानेर

—अमरसिंह पवार, राज० उ० प्रा० विद्या० महिला बाग, जोधपुर

—अहमद रशीद मसूगे, रा० उ० प्रा० विद्या०, घानकिया (जयपुर)

—त्रिलोक शर्मा राज० उ० प्रा० विद्या० देपूला (असवर)

—गुप्ता तिवारी, अध्या० C/o थो भवर लाल तिवारी, अरविन्द सदन, राधाकृष्णन नगर, भीलवाडा 311001

—कृष्ण सिंह सजल, उदय निवास रायपुर (पाटन) (सीकर)

- गुलाम मोहियुद्दीन माहिर, अध्या० रा० सा० उ० मा० विद्या०, बीकानेर
- सलीम खा 'फरीद' पत्रालय हसामपुर जनपद सीकर-38240
- ओमप्रकाश सारस्वत व्याख्याता राज० उ० मा० विद्या० अनूपगढ (गमानगर)
- जनक राज पारीक प्रधानाचार्य, ज्ञान ज्योति उ० मा० विद्या० श्री करनपुर (राज०)
- हरिओम कुमार शमा, रसीदपुर बाया महवा (सवाई माधोपुर)
- कैलाश मनहर अध्या० रा० मा० विद्या० घोरा साडरवानी मनोहरपुर (जयपुर)
- गुप्ता रघु प्र० अ०, पो० बा० उ० मा० वि० बगड धुंमुनू)
- प्रेम प्रकाश व्यास व्या० राज० उ० मा० विद्या० बालोतरा
- गिरवर प्रसाद विस्ता ब० अ० राज० उ० मा० विद्या० अनूपगढ (श्री गमानगर)
- योगेन्द्र सिंह भाटी 'योगी' प्र० उ० राज० मा० विद्या० फलवा (चित्तौडगढ)
- हरिश्चन्द्र सेन, व्या० राज० उ० मा० विद्या० मुबारिकपुर (अलवर)
- भागीरथ भागव, 88 आयनगर, अलवर (राज०)
- मुलाफी दाम 'बावरा' बावरा नियास, घोबीधोरा, सूरसागर के पास, बीकानेर
- नारायण कृष्ण 'अवैला' प्र० उ० राज० मा० वि० भटियानी चौहट्टा (उदयपुर)
- जगदीश प्रसाद आचार्य, व्या० राज० उ० मा० विद्या० मडता रोड (नागौर)
- रघुनाथ बतरा, गावि-दनगर, दिल्ली रोड, अलवर (राज०)
- रत्न कुमार शास्त्री 'रत्न' 398 ध्रुव मार्ग, तिलकनगर, जयपुर
- रजभूपण चतुर्वेदी 'बुजेश', रा० उ० प्रा० विद्या० मूडला बिसौती बाया बारा मोटा 325205
- शारदा कुमारी भटनागर, व्या० रा० शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय (महिला) बीकानेर
- जगदीश सैन अध्या० राज० उ० प्रा० विद्या डीडवाना पो० वारडी बाया देवगढ महारिया (उदयपुर)
- पूर्णमा शर्मा सहा निष्पक्ष, एस० आई० ई० आर० टी०, उदयपुर
- रमन गुप्त व्या० पान ज्योति उ० मा० विद्या० श्री करनपुर
- रमेश चन्द्र उपाध्याय, प्र० अ० राज० उ० मा० विद्या० परतापुर (बांसवाडा)
- अरुनी रावट स स० प्र० अ० राज० उ० मा० विद्या० सीसवाली (कोटा)
- मोहन लाल जोशी, रा० म० गांधी उ० मा० विद्या०, जोधपुर

- जितेंद्र श्री गो० जैन उ० मा० विद्या० छोटी सादडी 312604
- भूपेंद्र तनिक, 12/59 सिंगवाव, बासवाडा 32700 ।
- रामनिवास सोनी, वाली जी का चौक, डोडवाडा
- रमेश कुमार वमा, अध्या० 226 कृष्णपुरा (उदयपुर)
- श्रीमाली श्री वल्लभ घोष, सुग घ गल्ली, ग्रहपुरी, जोधपुर
- दीपचन्द सुथार अ० रा० उ० प्रा० विद्या० न० 1 भंडतामहर ना
- वासु आचाय, अध्या० बाहेती चौक, श्रीकानेर
- कैलाश चतुर्वेदी, हाईस्कूल रोड, भवानी मंडी
- जितेंद्र शंकर बजाड, शिक्षक P/O भीचोर (चित्तोडगढ)
- मोताराम राहमीर, राज० उ० मा० विद्या० बालातरा (बाडमेर)
- वीरेंद्र कपूर म० न० 755, सिंधी कालोनी, आदश नगर जयपुर
- डॉ० सरला गुप्ता "भूपेंद्र" अध्या० एस० पी० आर० सहारिया विद्या० कालाडेर (जयपुर)
- श्रीमती अजना भटनागर व० अ० रा० बा० मा० विद्या० चौमहल्ला झालावाड)
- ईश्वर लाल गारू "दशरू" प्र० उ० रा० उ० मा० विद्या० बीमोद (1)
- प्रकाश तातेड व्या०, रा० उ० मा० विद्या० आमत (उदयपुर)
- कुमारी सुशीला मृधा, C/O हिमालय प्रिंटर्स, कुम्हारिया कुआ, जोधपुर
- रूपसिंह राठीड, ग्राम पोस्ट बास घासीराम बाया अलसीसर जिला झु
- तुतुबुद्दीन, प्र/अ० रा० मा० विद्यालय, दानपुर कोड (सवाईमाधोपुर)
- मुकेश सुमि व्या० पोस्ट करनपुर 335073
- गुलाम मोहम्मद खुशीद, अध्यापक नकास गेट के अंदर, नागौर
- भोगीलाल पाटीदार, व० अ० राज० उ० मा० विद्यालय बनकोडा (झुंग)
- मेवाराज बटारा व्या० लाल दरवाजा बयाना (भरतपुर)
- जगदीश प्रसाद मिश्रा, प्रिंसिपल राज० उ० मा० विद्यालय सीसवाली
- रामनाथ मंगल व० अ० रा० दानिका माध्यमिक विद्यालय सादडी (पा)
- श्याम निर्मोही व० अ० रा० मा० विद्यालय कैलाशपुरी उदयपुर
- विद्या पालीवाल, F/38 पाला ग्राउण्ड उदयपुर (राजस्थान)

शिक्षक दिवस प्रकाशनो की सूची

वर्ष 1967 से 1973 तक इस योजना के अंतर्गत 31 सकलन प्रकाशित किये गये हैं। ये 31 प्रकाशन शिक्षा निदेशालय के प्रकाशन अनुभाग ने सम्पादित किये थे। 1974 से सकलनों का सम्पादन भारतीय व्याप्ति के लेखकों से करवाया गया। बाद के सम्पूर्ण सकलनों का विवरण इस प्रकार है—

- 1974 'रोशनी बाट दो' (कविता) स० रामदेव आचार्य, 'अपने आम-यास', (कहानी) स० मणि मधुकर, 'रग रग बहुरंग' (एकांकी) स० डॉ० राजा नंद, 'आधी अर जास्वा व भगवान महावीर' (दो राजस्थानी उप-यास) स० यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' 'बारखंडी' (राजस्थानी विविधा) स० वेद व्यास।
- 1975 'अपने से बाहर अपने में,' (कविता) स० मंगल सक्सेना 'एक और अन्तरिक्ष' (कहानी) स० डा० नवलकिशोर, 'सभाळ' (राजस्थानी कहानी) स० विजयदान देवा, 'स्वर्ग भ्रष्ट' (उप-यास) ले० भगवती प्रसाद व्यास, स० डॉ० रामदरश मिश्र 'विविधा' स० राजेंद्र शर्मा।
- 1976 'इस बार' (कविता) स० नंद चतुर्वेदी, 'सकल स्वरो के' (कविता) स० हरीश भादानी 'बरगद की छाया' (कहानी) स० डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, 'बेहूरा व बीच' (कहानी व नाटक) स० योगेंद्र कमल 'माध्यम' (विविधा) स० विश्वनाथ सचदेव।
- 1977 'सृजन के आयाम' (निबन्ध) स० डा० देवी प्रसाद गुप्त, 'क्यों' (कहानी व लघु उप-यास) स० श्रवणकुमार चेत रा चितराम (राजस्थानी विविधा) स० डा० नारायणसिंह भाटी, 'समय के सदम' (कविता) स० जगमोहन तायल 'रंग बितान' (नाटक) स० सुधा राजहंस।
- 1978 'अधरे के नाम सघि पत्र नहीं' (कहानी सकलन) स० हिमाशु जोशी 'लक्षण' (राजस्थानी विविधा) स० रावत सारस्वत, 'रचेगा संगीत' (कविता सकलन) स० नंदकिशोर आचार्य, 'दो गाव' (उप-यास) लेखक मुबारक खान आजाद स० डॉ० आदश सक्सेना, 'अभिव्यक्ति की तलाश' (निबन्ध) स० डॉ० रामगोपाल गोयल।
- 1979 'एक कदम आगे' (कहानी सकलन) स० ममता कालिया 'लगभग जीवन' (कविता सकलन) स० लीलाधर जगूडी, 'जीवन यात्रा का बोलाज/ न० ?' हिंदी विविधा) स० डा० जगदीश जोशी, 'कारणी कलम री,' (राजस्थानी विविधा) स० अनाराम मुदामा 'यह किताब बच्चा की (बाल साहित्य) स० डा० हरिकृष्ण देवसरे।
- 1980 'पानी की लकीर' (कविता सकलन) स० अमृता प्रीतम, 'प्रयास'

(कहानी सफल) स० शिवानी, 'मजूपा' (हिंदी विविधा) स० राकेश जैन, 'अतस रा आखर' (राजस्थानी विविधा) स० नरसिंह राजपुरोहित, 'पिलत रह गुलाब' (बाल साहित्य) स० जयप्रकाश भारती ।

1981 'अधेरा का हिमाव (कविता सफल) स० सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, 'अपन से परे' (कहानी सफल) स० मनू भण्डारी 'एक दुनिया बच्चा की' (बाल साहित्य) स० पुष्पा भारती 'सिरजण' (राजस्थानी विविधा) स० तेजसिंह जोधा व द मातरम् (हिंदी विविधा) स० विवेकी राय ।

1982 'धमक्षेने कुरुक्षेत्रे' (कहानी सफल) स० मणाल पाण्डे कौमी एक्ता की तलाश और अय रचनाए' (हिंदी विविधा) स० शिवरतन धानवी 'अपना-अपना जाकाश' (कविता सफल) स० जगदीश चतुर्वेदी, 'कूपळ' (राजस्थानी विविधा) स० करयाण सिंह शेखावत, 'फूला के य रंग' (बाल साहित्य) लक्ष्मीचंद्र गुप्त ।

1983 भीतर बाहर (कहानी सफल) स० मृदुल गग, 'रेती के दिन रात' (हिंदी विविधा) स० प्रभाकर माचवे 'घायल मुट्ठी का दद' (कविता सफल) स० डा० प्रकाश आतुर 'पाखुरिया माटी की' (बाल साहित्य) स० कल्याणलाल नंदन 'हिवड रा उजाम' (राजस्थानी विविधा) स० श्रीलाल नयमल जोशी ।

1984 'अपना अपना दामन (कहानी सफल) स० मजुल भगत, 'वस्तुस्थिति' (कविता सफल) स० गिरधर राठी सचयनिका (विविधा) स० यानवत्क्य गुरु फूल मारू पाखडी (राजस्थानी) स० शक्तिदान कविया 'सारे फूल तुम्हारे हैं' (बाल साहित्य) स० स्नेह अग्रवाल ।

1985 'रास्त अपने अपने (कहानी संग्रह) स० राजेंद्र अवस्थी सुनो ओ नदी रेत की (कविता संग्रह) स० बलदेव वशी, 'बबूल की महक' (बाल साहित्य) स० मस्तराम कपूर 'मह अचल के फूल (हिंदी विविधा) स० कमल विश्वोद गायनका, 'माणक चोक राजस्थानी (विविधा) स० मनोहर शर्मा ।

1986 'ढाई अखर' (कहानी संग्रह) स० आलमशाह खान, 'रेत का घर' (कविता संग्रह) स० प्रकाश जैन, 'रेत के रतन' (बाल साहित्य) स० मनोहर प्रभाकर, 'रेत रा रत' (राजस्थानी विविधा) स० हीरालाल माहेश्वरी, 'बूद-बूद स्याही' (हिंदी विविधा) स० पुष्पात्तमलाल तिवारी ।

1987 'बीच का आदमी तथा अय कहानिया (कहानी संग्रह) स० शानी, 'निर्निमेष' (कविता संग्रह) स० मेघराज मुकुल, 'मातिया का थाल' (बाल साहित्य) स० मनोहर वर्मा, 'माटी की सुवास' (हिंदी विविधा) स० सावित्री डागा 'सिरजण री सौरम' (राजस्थानी विविधा) स० नंद भारद्वाज ।

